भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 11 | **नवम्बर-दिसम्बर (संयुक्तांक)** 2010 | **अंक** 11-12

किताबों की खुशबू

किताबें!
शोभा नहीं हैं मात्र अलमारियों की,
न ही सजावट हैं ये सिर्फ दुकानों की।
किताबें सजाती हैं मन को,
सँवारती हैं दिल को,
परितृप्त करती हैं आत्मा को।

किताबें खोलती हैं संसार—
ज्ञान का,
अनुभव का,
संवेदना का हमारे सामने
और हम पाते हैं—
दुनिया को देखने की एक अभिनव दृष्टि,
(जिससे चमत्कृत तक कर देने वाले)
एक नये रूप में खुलती है हमारे समक्ष सृष्टि।

किताबें दुनिया का विकास हैं,
मनुष्य की जययात्रा का इतिहास हैं।

दुनिया में अगर किताबें न होतीं,
तो वह वैसी न होती, जैसी अब है।
किताबें न होतीं तो हम भी ऐसे कब होते,
जैसे अब हैं।

—हरीशकुमार शर्मा, अरुणाचल प्रदेश

पुस्तक-धन अनमोल है, सदा राखिये संग।
बिन इसके कैसे चढ़े, जीवन में नवरंग॥
पुस्तक ने जग को दिया, करुणा के संग प्यार।
जो पुस्तक-प्रेमी वही, जीते यह संसार॥
दोनों से रिश्ता रहे, पुस्तक-इंटरनेट।
इनसे करते हैं सदा, जिज्ञासुजन भेंट॥

—गिरीश पंकज

अक्षर

अक्षर ऊर्जा, स्नेह, साहस, कभी न क्षर अक्षर होते।
अक्षर उजास दिन का प्रकाश, हो नाद सदा अक्षर रहते॥
कल्पना बने अक्षर से ही, अर्थों की रचना अक्षर से।
मन्दिर मस्जिद अक्षर से न्यायालय चलता अक्षर से॥
अक्षर शिव है अविनाशी है वेदों में अक्षर प्राणित है।
अक्षर प्रयोग करता रहता, जग में जो प्राणी जीवित है॥

—डॉ० रामसुमेर यादव, लखनऊ

समय-संक्रमण के अन्तःसाक्ष्य

नये संकल्पों के साथ शंखनाद करते हुए, चतुर्दिक् गूँजते मंत्रोच्चारण के बीच, पवित्र नदियों का जल अपनी अंजलि में लेकर हमने 21वीं सदी के सूर्य को अपनी आस्था का अर्घ्य प्रदान किया। इस तरह अपनी सांस्कृतिक-परम्पराओं को, अपनी विरासत को साथ लेकर नवीन वैज्ञानिक संकल्पनाओं के साथ नयी शताब्दी का स्वागत करते हुए हम आगे बढ़े और इसी यात्रा-क्रम में बीत चला सदी का पहला दशक।

इस सदी की शुरुआत के संक्रमण-वर्ष सन् 2000 में ही 'भारतीय वाङ्मय' का उद्भव हुआ था। उस वक्त 'डिजिटल-युग' की आहट सुनी जा रही थी और आज तो वक्त भी डिजिटल-रिमोट से ही संचालित है। इन दस वर्षों के बीच भारतीय-भूगोल के सप्त-सिन्धु की नदियों में कितना पानी बह गया, सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक स्तर पर कितना खण्डन-मण्डन, निर्माण और ध्वंस चलता रहा इन सबका लेखा-जोखा तो कई शोध-ग्रन्थों के कई हजार पृष्ठों का दस्तावेज़ हो सकता है जिसकी अनुक्रमणिका भी इस क्षीणकाय अग्रलेख में न समा सकेगी।

इस एक दशक के दरम्यान बाज़ार-व्यवस्था के उदारीकरण और विदेशी-निवेश ने जहाँ नयी सम्भावनाओं का पथ प्रशस्त किया वहीं विदेशी पूँजी के आर्थिक-साम्राज्यवाद के विस्तार को आँख मूँदकर स्वीकार भी कर लिया गया। पूँजी और सत्ता के समीकरण ने 'मीडिया' को हथियार बनाकर अपने प्रचार-तंत्र के द्वारा हमारी भाषा, साहित्य, शिक्षा और संस्कृति को जिस तरह अपने शिकंजे में कसने की कोशिश आरम्भ की थी उसके परिणाम भी क्रमशः दिखलायी देने लगे हैं। हमारे बच्चे भूलते जा रहे हैं गिनती-पहाड़े और ककहरे, वे 'टेबल' रटते हैं 'ए' फॉर 'एपल' सीखते हैं। इस तरह क्रमशः भाषा बदल रही है, मुहावरे बदल रहे हैं, सोच बदल रही है, व्यवहार बदल रहे हैं क्योंकि हम खुद अपनी राष्ट्रीयता के प्रतिमानों और राष्ट्रीय-संस्कारों के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हैं। ऐसा भी नहीं कि इन स्थितियों का प्रतिवाद नहीं हो रहा किन्तु वह नगण्य है। विभिन्न भारतीय भाषाओं के सचेत रचनाकार क्षुब्ध हैं, उनका क्षोभ और आक्रोश भी कविताओं, कहानियों, नाटकों, उपन्यासों में व्यक्त हो रहा है किन्तु उनके पाठक सीमित हैं बल्कि कहा जाय तो ज्यादातर साहित्यजीवी ही साहित्य के पाठक रह गये हैं। आज का शिक्षित समुदाय भी शायद ही साहित्यिक-रचनाओं को पढ़ता हो फिर आम-आदमी की तो बात करना ही फिजूल है। आज घर-घर में पढ़ा जा रहा है टेली-साहित्य, घर-घर में व्याप्त हो रही है टेली-संस्कृति और यह सब कुछ सत्ता और पूँजी के सुनियोजित एवं प्रायोजित षड्यंत्रों का परिणाम है जिसका प्रतिकार भी आसान नहीं।

इन्हीं दस वर्षों की अवधि में हमने भुज का भूकम्प, सुनामी का खण्ड-प्रलय, गोधरा-संहार और दंगे, कोसी नदी की बाढ़-विभीषिका, किसानों की करुण-आत्महत्या, जगह-जगह नक्सल/माओवादी विद्रोह का अन्तःस्फोट और आतंकी हमलों का विस्फोट झेला है। विकास के नाम पर कृषि-योग्य भूमि का अधिग्रहण कर, परंपरित तौर पर वहाँ बसे हुए समुदाय का पुनर्वास की योजना के बिना विस्थापन और विस्थापित-जनों के विद्रोह का शासकीय-दमन

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

ब्रिटिश-राज की याद दिला गया। रिश्वतों-घोटालों का सिलसिला जो पहले हज़ार/लाख या करोड़ के बीच था दशक के आखिर तक आते-आते हज़ारों-लाख करोड़ के डिजिटल आँकड़े पार कर चुका है। 'काला हाँडी' की क्षुधा से लेकर दलितों-आदिवासियों जैसे वंचित-वर्ग की संवेदना का राजनयिक-व्यवसाय करने वाले दलाल या वर्ण-जाति-धर्म की 'पैकेजिंग' करने वाले राजनयिक-प्रबन्धक ही तो आज 'जन-गण' के 'भाग्य-विधाता' हैं।

कहना न होगा कि इस सदी के संक्रमण-कालिक पहले दशक में हमारी अस्मिता बाजार की भेंट चढ़ चुकी है। उदारीकरण के अतिरिक्त व्यामोह में हमने अपनी शिक्षा और संस्कृति को भी बाजार के हवाले कर दिया। इस अतिवादिता के दुष्परिणाम सामने आयें इसके पहले ही हमें अपने स्वातंत्र्य-संघर्ष के सबक दुहराने होंगे अन्यथा नव्य औपनिवेशिक-साम्राज्यवाद के विस्तार का अवरोध मुश्किल होगा। यद्यपि इसी दशक में प्रसंगवश हमने सन् 1857 के संघर्ष का स्मरण करते हुए क्रान्ति के पन्ने पलटे और महात्मा गाँधी के 'हिन्द-स्वराज' का पुनर्पाठ किया। क्रमिक-इतिहास के अध्ययन-अन्वेषण में ही अनुस्यूत है वर्तमान की विसंगतियों का सम्यक् समाधान।

सदी के इस पहले दशकीय-संक्रमण के समानांतर दूसरे दशक के नये वर्ष में प्रवेश करते हुए हमारी दृष्टि के केन्द्र में हैं देश के नौनिहाल-नौजवान। आत्म-ऊर्जा से दीप्त यह युवा-वर्ग अपने इतिहास और वर्तमान के महासिन्धु का अवगाहन करके आ रहा है जिसकी रगों में बह रहा है इतिहास, जिसके हाथों में है टेक्नोलॉजी का नया आविष्कार, जिसकी मेधा में है ज्ञान-विज्ञान। अब यही आगत-अनागत पीढ़ियाँ तय करेंगी भविष्य के लक्ष्य और प्रतिमान। हाँ, इसके लिए हमें भी प्रयत्न करना होगा, अपनी आशा के नक्षत्रों को नये सूरज की ऊर्जा से अभिसिंचित करना होगा ताकि अविराम चलती रहे मनुष्य की दिग्विजय-यात्रा।

श्रेय होगा मनुज का समता-विधायक ज्ञान,
स्नेह-सिंचित न्याय पर नव विश्व का निर्माण।
एक नर में अन्य का नि:शंक, दृढ़ विश्वास
धर्मदीप्त मनुष्य का उज्ज्वल नया इतिहास।

सर्वेक्षण

● **अभिव्यक्ति की आज़ादी :** हमारे संविधान के मूलभूत नागरिक-अधिकार में एक है अभिव्यक्ति की आज़ादी जो क्रमश: अनर्गल होती जा रही है। इस आज़ादी का दुरुपयोग तो राजनीति से लेकर स्वतंत्र-मीडिया के इलेक्ट्रॉनिक-प्रारूप में धड़ल्ले से किया जा रहा है। किन्तु जिन्हें हम जिम्मेदार मानते हैं उनसे तो सन्तुलन की अपेक्षा की जा सकती है लेकिन अब यह अपेक्षा भी शायद हमारा ही पूर्वाग्रह बन गयी है।

पिछले दिनों देश की राजधानी में एक संवेदनशील मुद्दे पर यानी कश्मीर को लेकर एक 'कान्फ्रेंस' का आयोजन किया गया। इस कान्फ्रेंस में अलगाववादियों के सरगना मि० गिलानी के सुर में सुर मिलाते हुए जिस तरह एक प्रतिष्ठित लेखिका (अरुन्धती राय) ने कश्मीर में मानवाधिकार-हनन के नाम पर तीखी बयानबाजी की उसे देशद्रोह कहना ही उचित होगा। लेकिन नक्कारखाने में कौन सुनता है हमारी आवाज़? कुछ भी हो, वे राजधानी के अंग्रेजी-दाँ बुद्धिजीवियों के बीच सम्मानित, प्रतिष्ठित, पुरस्कृत हैं। मुल्क की 'नेटिव' ज़ुबान में जनता के दु:ख-दर्द को सुन-समझ कर वे प्रतिष्ठा-भाषा (अंग्रेजी) में ही आत्माभिव्यक्ति करती हैं और इसीलिए अन्तर्राष्ट्रीय-स्तर पर सम्मानित, पुरस्कृत हैं। अब इतनी आज़ादी तो उन्हें चाहिए ही कि वे देश को टुकड़ों में बाँटने की वकालत करें। हमारा पूर्वाग्रह ही सही, हम तो उन्हें क्षमा नहीं कर सकते, क्या आप करेंगे?

●● **खुली हवा में :** किसी भी सामान्य व्यक्ति के मनोमस्तिष्क को क्षीण कर देने के लिए उसे अपनों से काटकर ऐकान्तिक जीवन जीने को मजबूर कर देना ही काफी होता है। लेकिन इस तथ्य को नकारते हुए बर्मा के सैन्य-शासन की कठोर नज़रबंदी में 18 साल गुज़ारने के बाद मुक्त की गईं वहाँ की लोकप्रिय नेता श्रीमती आँग-सान-सूकी अपने पुराने तेवर में ही नज़र आयीं। आत्म-विश्वास से परिपूर्ण श्रीमती सूकी का जीवन जनतांत्रिक अधिकारों की प्राप्ति के संघर्ष का पर्याय है। एक लम्बे अन्तराल के बाद दूरदर्शन के समाचारों के बीच उन्हें देखकर सुखद-अनुभूति हुई। उनके जीवन-संघर्ष को सलाम करते हुए आखिर गुनगुना उठा कवि-मन—

जिएँ तो अपने बगीचे में गुलमोहर के तले,
मरें तो ग़ैर की गलियों में गुलमोहर के लिए।

—परागकुमार मोदी

सामलगमला

[कहानी समग्र]

विवेकी राय

पृष्ठ : 668

प्रथम संस्करण : 2011

सजि. : रु० 750.00

ISBN : 978-81-7124-760-8

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

ग्रामांचलिक जीवन से सम्बन्धित कथा-साहित्य क्षेत्र के समर्पित मौलिक शैलीकार डॉ० विवेकी राय के कुल सात कहानी-संग्रहों का समग्र रूप में प्रकाशन निश्चित रूप से एक बहुत बड़ी आवश्यकता की पूर्ति है। लगातार छ: दशक तक कहानी साहित्य की समस्त पीढ़ियों और आन्दोलनों को आत्मसात करते हुए उक्त क्षेत्र में कलम चलाकर, ग्राम जीवन के यथार्थ को, उसके सुख-दु:ख को प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करके आपने एक कीर्तिमान स्थापित किया है। आपकी कहानियाँ अपने वृहत्तर रचनात्मक सरोकारों के साथ सम्पूर्ण भारत के स्वातंत्र्योत्तर गाँवों का साक्षात् कराती हैं। टुच्ची राजनीति और विकास के खोखले दावों से दो-दो हाथ करते दिखाई देते डॉ० राय प्रेमचंद और फणीश्वरनाथ रेणु के बाद गाँव की पृष्ठभूमि पर लिखने वाली पीढ़ी के सबसे सशक्त कथाकारों की श्रेणी में शिखरस्थ हैं। ग्राम्यांचल, कृषि-संस्कृति और अध्यापक-जीवन के विभिन्न अनुभवों की झाँकियों से संपृक्त इन कहानियों में आपने अपने अन्दर के प्रौढ़ भाषाविद् व कुशल कथा-लेखक को जमकर खटाया है,जिससे ये कहानियाँ नये सन्दर्भों के साथ अपनी अर्थवत्ता को ग्रहण कर सकी हैं।

मन्दिरों में पशुबलि

—प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र (शिमला)
पूर्व कुलपति, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

पाश्चात्य देशों में जब महिलाओं एवं पुरुषों का 'श्वानप्रेम' देखता हूँ तो विस्मय होता है। कुत्तों को साबुन लगा कर नहलाना, उनके बालों में कंघी करना, उन्हें चूमना-चाटना तथा उनसे अपना मुँह चटवाना, उनकी जीभ से अपनी जीभ तक मिला देना और अन्ततः उन्हें गोदी में लेकर घुमाना! यह सब रोज देखने को मिलता है विदेशी चैनलों पर प्रसारित '**डॉग शो**' में!

और तभी याद आता है उनका गो-भक्षण, सूकर-भक्षण! यही उनका मुख्य भक्ष्य है। यूरोप-अमेरिका में 'स्लाटर हाउस' अब इतने अत्याधुनिक एवं यंत्रसज्जित बन गये हैं कि एक सिरे पर दिखती हैं कटने के लिये आगे बढ़ती गायें और दूसरे सिरे पर निकलता है उनका पैकेटबन्द मांस। यानी जैसे ईख की पेराई से चीनी बनने तक की प्रक्रिया अविच्छिन्न है, तात्कालिक है—ठीक उसी प्रकार जीवित गाय अथवा सूकर का मांस का पैकेट बन कर निकलना!

तब मैं सोचने लगता हूँ विदेशियों के मानसिक धरातल को, जो कुत्ते-बिल्ली के प्रति इतना उदार, सदय और सहानुभूतिप्रयण है तथा गाय-सुअर के प्रति इतना कठोर, निर्दय, नृशंस एवं सहानुभूतिहीन! वह कैसा मन है जो दो विरोधी ध्रुवों में एक साथ पल रहा है? इन विदेशियों को पशु प्रेमी कहा जाय अथवा पशुभक्षी!

बूचड़खानों का प्रत्यक्ष-अनुभव एक मित्र ने मुझे बताया कि वहाँ वधार्थ लाये गये बड़े जानवरों (भैंस आदि) को घण्टों पहले एक विशेष युक्ति से फाँसी लगा दी जाती है जिसकी यन्त्रणा में मृतप्राय बने पशु, वध के समय, छटपटाने या चीखने-चिल्लाने तक की स्थिति में भी नहीं रह जाते! या तो उनकी गर्दन तोड़ दी जाती है या श्वासावरोध कर दिया जाता है। कुछ वर्ष पूर्व मैंने इलाहाबाद में स्वयं देखा कि एक व्यक्ति साइकिल की पिछली सीट पर रखे पलड़े पर एक बकरे को बाँध कर ले जा रहा है। बकरे के चारों पैर, मनमाने ढंग से तोड़-मोड़ कर बाँध दिये गये थे तथा उसकी सीगों में रस्सी बाँध कर, गर्दन को भी दोहरा मोड़ कर सीट से बाँध दिया गया था। इस असीम यन्त्रणा से अधमरा वह आसन्न-मृत्यु प्राणी 'साँय-साँय' की आवाज में कभी-कभी चिल्लाने का यत्न कर रहा था।

हे प्रभो! हे परमेश्वर! तुमने ऐसे मनुष्य बनाये ही क्यों जो दूसरे जीव की पीड़ा, यन्त्रणा, मृत्युव्यथा तथा संत्रास का अनुभव नहीं करते? अपने पैर में काँटा भी धँस जाय तो 'हाय' निकल जाय, परन्तु हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले, मनुष्य के ही समान समस्त संवेदनाओं (भूख-प्यास, नींद, भय तथा भोगेच्छा) वाले एक भारी-भरकम पशु को, छल-छद्म से बाँध कर—असहाय बना कर, छुरी से रेत देना कहाँ का न्याय है? कहाँ का धर्म है? धर्म का तो अर्थ ही है धारण करने वाली शक्ति (Power of Maintenance) **धर्मो धारयति प्रजाः** अर्थात् जो प्रजा को (जीवों को) धारण करें वही धर्म है। और जीवों को धारण करने वाला प्रथम सोपान तो उनका '**प्राण**' ही है। सत्य, विद्या, अमोध, शौच, इन्द्रियनिग्रह, अस्तेय, धृति तथा क्षमा आदि तो जीव को तभी धारण करेंगे न, जब वह प्राणवान् हो! जब प्राण ही नहीं रहे तो धारण करने वाले अन्य सारे धर्मस्तोत निरर्थक हो जाते हैं। अतएव 'अहिंसा' ही सर्वश्रेष्ठ धारकतत्त्व है। अथवा यह कहें कि **अहिंसा ही** एकमात्र धारक तत्त्व है—समूचे विश्व में!

'**अहिंसा परमो धर्मः**' कहने का यही स्वारस्य है। गीता में स्वयं योगीश्वर कृष्ण ने 'अहिंसा तथा भूतदया' को दैवी सम्पद् का अंग बताया है। '**अद्वेष्टा सर्वभूतानाम्**' अर्थात् जो समस्त प्राणियों से द्वेष नहीं करता (प्रेम करता) है वही व्यक्ति परमेश्वर को प्रिय है (अ० 12) '**निर्वैरः सर्वभूतेषु**' अर्थात् जो समस्त प्राणियों के प्रति निर्वैर है, वही परमेश्वर को प्राप्त करता है (अ० 11) जो पशुओं से द्वेष नहीं करेगा, उनसे वैर नहीं करेगा, वह भला उन्हें क्यों मारेगा? किसी अन्य द्वारा भी मारे गये उन पशुओं को क्यों खाना चाहेगा?

परन्तु मांसाहारियों को यह दर्शन, यह सत्य, यह तत्त्वज्ञान समझा पाना कठिन है। क्योंकि उनके पास 'दुर्बुद्धि' के साथ ही साथ 'कुतर्क' भी है। 'दुर्बुद्धि' इसलिये कि वे पूर्वाग्रहग्रस्त हैं। वे मांसाहार के अभ्यस्त हैं। 'कुतर्क' इसलिये कि वे पलट कर, आप के ही **तथाकथित** धर्मग्रन्थों का हवाला देने लगेंगे। दुर्भाग्यवश, भारतवर्ष में भी किसी ऐतिहासिक कालखण्ड में, यज्ञों में पशुबलि की प्रथा रही है। कुछ लोग तो वेदमन्त्रों के प्रामाण्य से भी पशुबलि का विधान मानते हैं। वस्तुतः यह सन्दर्भ ही अत्यन्त विवादास्पद एवं सन्दिग्ध है। परन्तु प्राचीन संस्कृत-वाङ्मय के अपने नैष्ठिक अध्यमन से मैं इतना तो निश्चयपूर्वक कह सकता हूँ कि प्रचलन के बावजूद भी यज्ञों, मन्दिरोत्सवों तथा सामाजिक जीवन में 'पशुवध' कभी भी न प्रशस्त माना गया, न ही लोकप्रिय रहा।

यह सोचने की बात है कि यज्ञों में पशुबलि कब, क्यों और कैसे आई? यह सब एक दिन में नहीं हुआ होगा। हजारों वर्षों के अनन्तर ही ऐसा सम्भव हुआ होगा। वैदिक एकेश्वरवाद का विकास जब 'त्रिदेववाद' तथा 'बहुदेववाद' में हुआ तो प्रत्येक देवता की उपासना का अपना सम्प्रदाय भी स्थापित हुआ। शैव, शाक्त, गाणपत, सौर, वैष्णव तथा कार्त्तिकेय के सम्प्रदाय बने। अगले चरण में, प्रत्येक सम्प्रदाय ने अपने-अपने देवता के पूजाविधान का कर्मकाण्ड विकसित किया जिसे **आगम** कहा गया। प्रत्येक आगम ने अपने देवता के सात्त्विक, राजस एवं तामस रूपों की कल्पना की तथा तदनुसार आगमिक कर्मकाण्ड का विस्तार किया। आज भी भारतीय समाज में शैवागम, शाक्तागम (कौलागम) तथा वैष्णवागम का प्राधान्य है धर्माचरण के क्षेत्र में। सबके पृथक् षोडशोपचार, कवच-अर्गला-कीलकादि हैं।

देवता की प्रकृति भी मनुष्य जैसी ही होती है। जैसे मनुष्य दान-दक्षिणा, तीर्थाटन तथा उपकारादि करते समय सत्त्व-प्रधान (सात्त्विक) विविध आभ्युदयिक कर्तव्यों के निर्वहण के समय रजः प्रधान (राजस) तथा गाली-गलौज, दुष्कर्म तथा हत्यादि के क्षणों में तमः प्रधान (तामसिक) होता है वैसे ही देवता भी त्रिगुणात्मक हैं। जो भगवती त्रिपुरसुन्दरी शिवगृहिणी हैं, अन्नपूर्णा हैं जगज्जननी हैं वह निश्चय ही सत्त्वप्रधान हैं। उनका भोजन आचरण, चिन्तन, स्वरूप—सब कुछ सात्त्विक है। परन्तु जो भगवती दुर्गा भक्तों की दुर्गतिनाशिनी, चिन्तापूरणी तथा वरदायिनी हैं वह राजस प्रवृत्ति की हैं। और जो समरांगण में चण्ड-मुण्ड, शुम्भ-निशुम्भ और महिषासुर का वध करने वाली हैं वह तो अनिवार्यतः तामसप्रवृत्ति की होंगी ही। वह यदि युद्ध से पूर्व सुरापान नहीं करेंगी, रक्तपान नहीं करेंगी तो युद्ध करेंगी कैसे? क्या घर में आँधी-तूफान खड़ा कर देने वाली आपकी पत्नी वही होती है जो अनुराग के क्षणों में आप पर अर्पित होती है? क्या अपना बाँझपन दूर करने के लिये, देवरानी के बेटे की बलि चढ़ा देने वाली नारी 'ममतामयी' कही जा सकती है? कदापि नहीं।

आगमों में शिव-प्रतिशिव, शक्ति (लक्ष्मी) प्रतिशक्ति (कालिका) गणेश-प्रतिगणेश, नृसिंह-प्रतिमृसिंह, विष्णु-प्रतिविष्णु के रूप में प्रत्येक देवता के सहज तथा असहज रूप की कल्पना की गई। प्रत्येक देवता का असहज स्वरूप तामसिक होता है, फलतः उसका भक्ष्य (मांस-मज्जादि) पेय (रक्त-सुरादि) तथा परिधानादि सब के सब तामसकोटि के ही होते हैं।

परन्तु हमें यहीं यह भी समझ लेना चाहिये कि तामसिकता प्रकृति भी हो सकती है और विकृति भी। उदा० हाथी स्वभावतः सरल, उदार तथा सहिष्णु होता है। परन्तु काम की स्थिति में वह तामसिक हो उठता है। यहाँ तामसिकता गज की प्रकृति नहीं, विकृति (आरोपित धर्म) कही जायेगी। परन्तु बर्बर सिंह, देखते ही आपको फाड़ खायेगा। यदि किसी कारण से वह ऐसा न करे तो

आश्चर्य ही होगा। तामसिकता सिंह की प्रकृति है। यदि पेट भरा होने के कारण, वह किसी पर आक्रमण नहीं करता तो वह विकृति ही मानी जायेगी।

अपने जीवन में भी हम हर समय धन नहीं लुटाते रहते, हर समय झगड़ा-फसाद नहीं करते। वस्तुत: स्वभावत: सात्त्विक होते हुए भी, हम अवसर-विशेष पर ही, राजस एवं तामस होते हैं। परन्तु चोर-लुटेरे-हत्यारे-नृशंस तो स्वभावत: तामस ही होते हैं। यदि वे कभी दयालु, सत्यवादी, उदार तथा सहृदय बन जाँय तो समझिये कि यह उनकी विकृति ही है।

मनुष्य तो अपने जन्मजन्मान्तर के कर्मविपाकवश ही सात्त्विक स्वभाव का होता है। परन्तु देवता तो स्वभावत: 'सत्त्वमूर्ति' होते हैं। उनकी तामसीवृत्ति, उनकी प्रकृति नहीं अपितु विकृति ही है। प्रकृति स्थायी तथा विकृति अ-स्थायी होती है।

परन्तु हमें देवता के प्रकृत अथवा स्थायी (सहज) रूप की ही उपासना करनी चाहिये। यदि आप बकरा या भैंसा काट कर भगवती दुर्गा को प्रसन्न करना चाहते हैं तो यह आपकी मूर्खता है क्योंकि न वह तामसिक प्रवृत्ति की हैं और न ही उन्हें यह अनवसर 'रक्तपात' भायेगा। वस्तुत: सात्त्विक देवता की यह तामसी पूजा आप अपनी या पुजारियों की जिह्वालोलुपता के लिये कर रहे हैं। यदि आपके बकरा काटने से, उनके घर में भी बेहद मँहगा मांस छौंकने-बघारने को मिल जाय तो क्या हर्ज है? वे तो पशुबलि को धर्म का स्रोत बनायेंगे ही!

परन्तु याद रखें जैसे कीचड़ से धोने पर, पैर में लिपटा कीचड़ नहीं धुल पाता, ठीक इसी प्रकार निरीह-बेजुबान पशु की हत्या से न कोई (सत्त्वमूर्ति) देवता प्रसन्न होता है और न ही पुण्यलाभ होता है। भगवान् वेदव्यास स्वयं कहते हैं श्रीमद्भागवत में—

यथा पङ्केन पङ्काम्भः सुरया वा सुराकृतम्।
भूतहत्यां तथैवैकां न यज्ञैर्मार्ष्टुमर्हति॥

1.8.52

मालवाधीश भोजराज परमशैव थे। परन्तु उनके राजकवि धनपाल जो वयोवृद्ध तथा पितृकल्प थे, जैनधर्मावलम्बी थे। स्वयं भोज उनका बड़ा आदर करते थे। फिर भी एक बार यज्ञ में बलि के निमित्त लाये गये यूपबद्ध मिमियाते बकरे को दिखा कर, भोज ने धनपाल से एक भद्दा मजाक कर दिया—कविवर! आप तो सर्वज्ञ हैं। बताइये यह बलिपशु क्या कह रहा है?

विद्वान् नरेश का यह व्यङ्ग्य धनपाल को तीर सा लगा। उन्होंने तत्काल पद्यबद्ध उत्तर दिया—

नाहं स्वर्गफलोपभोगरसिको नाऽभ्यर्थितस्त्वं मया
सन्तुष्टस्तृणभक्षणेन सततं साधो! न युक्तं तव।
स्वर्गं यान्ति यदि त्वया विनिहता यज्ञे ध्रुवं प्राणिनः
यज्ञं किन्न करोषि मातृपितृभिः पुत्रैस्तथा बान्धवैः॥

राजन्! यह बकरा आपसे कह रहा है—न मैं स्वर्ग के निवासोपभोग का रसिक हूँ, न उसके लिये मैंने आपसे प्रार्थना की। मैं तो घास चर कर ही सदैव सन्तुष्ट रहता हूँ। हे राजन्! आपके लिये भी यह कोई धर्म तो है नहीं। अरे! यदि आप द्वारा मारे गये प्राणी ही, निश्चित रूप से स्वर्ग प्राप्त करते हैं तो यह यज्ञ आप अपने माता-पिता, पुत्रों तथा बन्धु-बान्धवों की बलि देकर क्यों नहीं सम्पन्न करते?

धनपाल ने पश्चात्तप्त भोज को अन्त में समझाया कि राजन्! आपका यज्ञ कैसा होना चाहिये!

सत्यं यूपस्तयो ह्याग्निः कर्माणि समिधो मम।
अहिंसायाहुतिं दद्यादेष यज्ञः सनातनः॥

आचार्य धनपाल का उत्तर सुनते ही सहृदय नरेश भोजदेव अश्रुकातर हो उठे। उन्होंने अपनी अवज्ञा के लिये क्षमा माँगी। यूपबद्ध पशु को भी मुक्त करा दिया तथा जीवन में फिर कभी पशुबलि से युक्त यज्ञ नहीं किया। यह कल्पना नहीं, एक ऐतिहासिक सत्य है।

प्राय: अधिकांश शक्तिकेन्द्रों में पशुबलि का विधान था। गुवाहटी के कामाख्या-मन्दिर में तो अभी भी महिषबलि चल रही है। हिमाचलप्रदेश के नवयुवकों ने प्राय: सभी शक्तिपीठों पर पशुबलि बन्द करा दी! माँ भगवती उन्हें दीर्घायु करें। परन्तु हिमाचल के ग्रामन्दिरों में यह नृशंसप्रथा अभी भी चल रही है। देवता के उत्सव के नाम पर पचास-साठ बकरों को काट देना साधारण बात है। कटते तो हैं बकरे देवता के नाम पर, परन्तु मूल उद्देश्य होता है जुटी हुई भीड़ को मांसतृप्त करना। नवयुवकों को इस दिशा में भी आगे आना चाहिये। जो देवता भेड़-बकरे की बलि से प्रसन्न हो सकता है, आपकी कामना पूर्ण कर सकता है, वह भला बेटे-बेटी की बलि से प्रसन्न क्यों नहीं होगा? हजारगुना अधिक प्रसन्न होगा! एक बार ऐसा करके तो देखिये! यदि नहीं कर सकते तो भगवान् के नाम पर, कृपया निरीह पशुओं पर अत्याचार मत कीजिये और दुहराइये मेरे साथ यह वेदमन्त्र—

कृणुहि गोजितो नः। ऋ० 3.31.20
हम गोधन से युक्त हों।
पशून् नः गोपा। ऋ० 7.13.3
हे परमेश्वर! हमारे पशुओं की रक्षा कर।
प्रजावान्नः पशुयानस्तु गातुः। ऋ० 3.54.18
हमारा घर सन्तानों एवं पशुओं से भरा-पूरा हो।

संसार के आधे विद्वानों को पत्नी और पुस्तक में से किसी एक का चयन करना पड़े तो वे पुस्तक का चयन करेंगे। बाकी के आधे विद्वान होते ही कहाँ है?

गुप्त साम्राज्य

[पूर्णतया संशोधित एवं परिवर्धित नवीन संस्करण]

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त

तृतीय संस्करण : 2011

पृष्ठ : 708 पृ०

सजि. : रु० 750.00 ISBN : 978-81-7124-725-7
अजि. : रु० 450.00 ISBN : 978-81-7124-772-1
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

इतिहास-लेखन कला भी है और साहित्य का महत्त्वपूर्ण अंग भी। अक्सर इस सम्बन्ध में चर्चा होती रहती है। अकबरनामा, बाबरनामा, जहाँगीरनामा जैसे अनेक ग्रन्थ क्या इतिहास हैं या जीवन-चरित? इस सम्बन्ध में मत-मतान्तर होते रहते हैं। हमारे पुराण भी इतिहास हैं क्योंकि इसके माध्यम से भारत की प्राचीनतम परिस्थितियों की जानकारी मिलती है, लेकिन आज के देशी और विदेशी इतिहासकार इनको मिथक मानकर स्वीकार नहीं करते। प्राचीन भारतीय इतिहास के सूत्र इतने कम और इतनी अधिक दिशाओं में प्रक्षिप्त हैं कि उनको एक सुनिश्चित रूप देना सहज नहीं है। सुलभ सामग्री का विवेचन और विश्लेषण कर ही इतिहास का रूप तैयार होता है। इस दिशा में डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त का भगीरथ प्रयास प्रशंसनीय है। गुप्त साम्राज्य का राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक इतिहास तैयार करने में उन्हें अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़ा है। शोधपरक सामग्री, उत्खनन से प्राप्त सिक्के, टेराकोटा प्रभृति के विश्लेषण से इतिहास का रूप निर्मित होता है। इस ग्रन्थ के लेखक ने सन् 1970 ई० में इसे प्रकाशित कराया था। तब से शोधादि सामग्री तथा मुद्राओं से अनेक ऐसे तथ्य आए जिनसे पुनर्लेखन तथा नई सामग्री का विवेचन-विश्लेषण करना पड़ा। प्रस्तुत ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण सन् 1991 ई० में प्रकाशित हुआ। लेखक का श्रमसाध्य अनुसन्धान तब से जारी रहा। मुद्रा-शास्त्री होने की वजह से तथा नई-नई सामग्री प्राप्त होने से विषय-वस्तु में परिवर्तन, परिवर्धन और विवेचन करना पड़ा। भारत के प्राचीन इतिहास में गुप्त-वंश या गुप्त साम्राज्य बड़ी ही उत्कर्षपूर्ण विरासत रही है। लेखक आजीवन साधक के रूप में इस कार्य में निमग्न रहे हैं। ग्रन्थ के इस तीसरे संस्करण में इतिहास-सम्मत आधुनिकतम तथ्यों का समावेश किया गया है जिससे स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को पूर्वापेक्षा नई सामग्री पढ़ने को मिलेगी। परमेश्वरीलाल गुप्त इस धरती पर नहीं हैं, लेकिन उनका शोधसम्पन्न विवेचन पाठकों को आगे के अध्ययन में सहायता प्रदान करेगा।

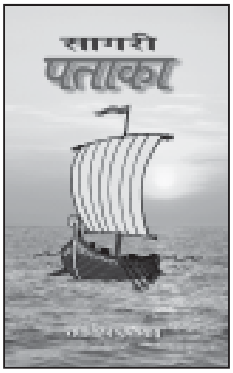

सागरी पताका

[हिन्दी का प्रथम ग्लोबल उपन्यास]

राधामोहन उपाध्याय

'' यह विश्व का प्रथम ग्लोबल उपन्यास है जो हिन्दी में लिखा गया है। यह भारतीय ज्ञान का वृहद् कोष है क्योंकि इसमें यज्ञ, गीता दर्शन, सांख्य दर्शन, श्राद्ध, आत्मवाद, मूर्तिपूजा आदि अनेक महत्त्वपूर्ण विषयों पर गम्भीर चिन्तन है।

आकार
डिमाई

पृष्ठ
248 + 8
पृष्ठ चित्र

सजिल्द : 81-7124-213-8 • रु० 250.00

(पुस्तक का एक अंश)

आज पहली बार गारुड़ि पोत द्वारका तट पर लगे। वहाँ से द्रुतगामी अश्वों से संदेश लेकर सैनिक अयोध्या की ओर चल दिये। पाँचवें दिन राजा सगर के दरबार में दूत पहुँच गये। मंत्रिपरिषद् के सदस्यों समेत स्थल सेनाध्यक्ष एवं बहुत से विशिष्ट नागरिक भी उपस्थित थे। दो सैनिकों ने पहले राजा का, तदनन्तर पुरोहित वशिष्ठ, मंत्रिपरिषद के सदस्यों एवं अन्य सम्भ्रान्त जनों का अभिवादन किया, एक ने बोलना शुरू किया, ''जय हो राजाधिराज महाराज सगर की। हमारे पोत पश्चिमी सागर के अंत तक पहुँच चुके हैं। वहाँ से आगे वाले द्वीप का पूर्वी तट पकड़ कर हमारे सातों बेड़े सौ योजन (नौ सौ मील) का विस्तार लेकर दक्षिण दिशा की ओर बढ़े। कुछ आगे बढ़ने पर लालसागर दिखाई पड़ा। इसकी जानकारी तो प्रथम बेड़े पर आसीन महाज्योतिष को पहले से ही थी।'' राजा ने कहा, 'महर्षि अत्रि और अगस्त्य ने हमारा काम बहुत हल्का बना दिया है। अत्रि ने सौ वर्षों तक समुद्रान्वेषण का अभियान किया था लेकिन वे केवल पश्चिमी सागर तक ही रह गये। वस्तुत: उन्हें राजाश्रय प्राप्त न था। उनके अधिकांश व्यक्ति अग्निद्वीप (अफ्रीका) में ही रह गये। कुछ सामुद्रिक जलवायु सहन न करने के कारण सागर पृष्ठ पर ही मर गये। इसके बाद अत्रि ने अपना समुद्रान्वेषण अभियान बन्द कर दिया। अत्रि के समान भूगर्भवेत्ता आर्यावर्त में बहुत कम ऋषि हैं। अत्रि ने तो यह भी बताया है कि जहाँ आज हिमालय है वहाँ पहले सागर था। रसातल और पाताल के बीच (दक्षिणी-उत्तरी अमेरिका) विशाल सागर था। इसमें भूमि निकल आई है और दोनों लोक लगभग जुड़ गये हैं। हमारे गुरुवर वशिष्ठ भी भूगर्भ विद्या में कम पैठ नहीं रखते।'

'अगस्त्य ने क्या किया था श्रीमान्?' एक नागरिक ने प्रश्न किया।

'अगस्त्य की खोज का विषय पूर्वी सागर था और अत्रि की अपेक्षा महर्षि अगस्त्य को अधिक सफलता मिली थी।'

'तभी तो लोगों ने विनोद के स्वर में कहना शुरू कर दिया था कि अगस्त्य ने समुद्र को सोख लिया।' एक दूसरे नागरिक ने कहा।

'बिल्कुल ठीक कहा आपने,' राजा ने कहा, 'महर्षि अगस्त्य के हम भारतवासी ऋणी हैं। अगस्त्य के चलते ही ब्रह्म देश (बर्मा), यवद्वीप, पूर्व काम्बोज (कम्बोडिया), सुमात्रा, बालिद्वीप आदि अनेक पूर्वी द्वीपों का पता लगा है। यही कारण है कि हमारे सभी पोत पश्चिम सागर की ओर बढ़ रहे हैं। महर्षि अत्रि का ही कहना है कि इस पश्चिम सागर के बाद अभी कई बड़े-बड़े सागर हैं। अस्तु (दूत की ओर मुँह करते हुए) ठीक है, बोलिये, रक्तसागर में हमारे बेड़े प्रवेश कर चुके हैं?'

''श्रीमान्, केवल प्रथम बेड़ा उधर अग्रसर हुआ था। दूरवीक्षण यंत्र की सहायता से सागर के दोनों पार्श्व उत्तरी और दक्षिणी बिल्कुल साफ-साफ दिखाई पड़ रहे थे। दक्षिण पार्श्व के प्रदेशों के निवासी बिल्कुल कृष्ण वर्ण के थे, उत्तर पार्श्व में लोग अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर एवं गोरे थे। लेकिन उत्तर पार्श्व की जमीन अनुपजाऊ लग रही थी। जबकि रक्तसागर के दक्षिण तट की जमीन अधिक उपजाऊ लग रही थी। हम अभी थोड़ी दूर ही बढ़े होंगे कि हमारा टोही जत्था पीछे की ओर लौट पड़ा। पता लगा कि आगे जमीन है। अत: हमारी यात्रा दक्षिणाभिमुख हो गयी। हमारे दाहिनी ओर यह विशाल भूखण्ड था। हमारे बेड़े यहाँ नहीं लगे।''

'यही आग्नेय महाद्वीप है (अफ्रीका)। यहाँ अनेक हिंस्र जन्तु रहते हैं। यहाँ के निवासी स्वभावत: धर्मपरायण, कष्टसहिष्णु, विश्वसनीय एवं मितव्ययी होते हैं। अत्रि के शिष्यों ने यहाँ वैदिक धर्म का व्यापक प्रचार किया है। महर्षि अत्रि के ही एक शिष्य से यह जानकारी मिली है कि लालसागर के दक्षिणी तट पर रिपुसूदन नाम का एक आर्य राजा राज्य करता था। उसी के राज्य के पूर्व में पाताल लोक (वर्तमान अमेरिका) निवासी सुमाली ने आकर अपना राज्य (सुमाली और सोमालिया) बसा लिया है और रिपुसूदन की हत्या कर उसके राज्य सूदन (सूडान) को भी हड़प लिया है। वहाँ धीरे-धीरे अनार्य संस्कृति फैलती जा रही है, राजा ने आगे कहा।'

श्रीमान्, दूत ने कहा, ''हमारी दक्षिणाभिमुख यात्रा संकटों से पूर्ण रही है। विषुवत रेखा के नजदीक से गुजरने से भयंकर आँधी, तूफान, वर्षा आदि झेलना पड़ता था लेकिन कहीं कोई क्षति नहीं हुई। महिलाएँ ज्यादा अस्वस्थ हो रही थीं किन्तु समय से अनुकूल औषधि प्राप्त होने से कोई क्षति नहीं हुई। भारतीय सागर के ही पश्चिमी छोर से हम आगे बढ़ते गये और आग्नेय द्वीप (अफ्रीका) पीछे छूट गया। वहाँ दक्षिण की ओर सागर की धारा इतनी तीव्रगति से जा रही थी कि पोतों पर नियंत्रण पाना कठिन हो गया। करीब एक पक्ष की अनवरत यात्रा के बाद हम लोग तो एक विचित्र सागर में पहुँच गये। प्रचण्ड सर्दी, सूर्य की किरणों का अभाव, भयावह अंधकार। इसी दूरवीक्षण से महाज्योतिष ने देखा आगे बर्फ का ही सागर है। तिमिंगल भी इधर-उधर दिखाई पड़ रहे थे। प्रहार पंक्ति के पोत लौट आये। पता चला सागर जल पर बर्फ के पर्वत तैर रहे हैं।''

'यही तो श्वेतवर्ण क्षीरसागर है। उधर मानव को जाने की अनुमति नहीं है।' राजा ने कहा।

'श्रीमान् जी,' एक पार्षद ने प्रश्न किया, 'विष्णु तो जगत् के रक्षक हैं। फिर जानलेवा बर्फ पर क्यों रहते हैं?'

'प्रभु की लीला तो प्रभु ही जानते हैं', राजा ने गुरु वशिष्ठ की ओर देखा और बोलने को उत्सुक देख गुरु से भी इस विषय पर कुछ कहने को कहा। गुरु वशिष्ठ बोले, ''राजन्, आपने जो कुछ कहा वह काफी विवेकपूर्ण लग रहा है लेकिन पृथ्वी के मानव से सहज में एक भूल हो जाती है। वह अनन्त लोकनायक परमेश्वर का आद्यन्त इसी पृथ्वी पर खोजता है। यह भूल है। अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड में क्षीरसागर कहाँ है यह बताना साधारण मानव के लिए असम्भव है। नारदादि ऋषि ही इस मर्म को जानते हैं।'' राजा ने कहा, 'सत्य है गुरुदेव। लेकिन इतना निश्चित है कि यदि यह क्षीरसागर (दक्षिणी ध्रुव) न होता तो पृथ्वी का संतुलन तो बिगड़ता ही अधिकांश पृथ्वी जलमग्न हो जाती। जलवायु में परिवर्तन होता, अतिवृष्टि, अनावृष्टि का खतरा होता।'

'श्रीमान् जी,' स्थल सेनाध्यक्ष ने प्रश्न किया, 'इस बर्फीले प्रदेश को क्षीरसागर क्यों कहा गया?'...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

बदल जायेगी किताबों की दुनिया

विषय और क्षेत्र कोई भी हो, लेकिन कुछ भी लिखने और उसके छपने के दिन अब समाप्त होने वाले हैं। बच्चों और युवाओं के लिए लिखी जाने और छपने वाली पुस्तकों के विषय में विशेष सावधानी रखी जाएगी। उसके लिए अलग से एक स्वायत्तशासी राष्ट्रीय बाल साहित्य परिषद का गठन हो सकता है। देश के पूरे प्रकाशन क्षेत्र को नियमों, कायदों और मर्यादाओं की मानक संहिता के दायरे में रखने के लिए पुस्तक प्रकाशन नियामक प्राधिकरण भी बन सकता है। सरकार देश में किताबों के प्रकाशन की भी एक नीति चाहती है। मंशा, सभी विषयों पर अच्छी से अच्छी किताबें उपलब्ध कराना है। उसके लिए राष्ट्रीय पुस्तक संवर्द्धन नीति-2010 का मसौदा तैयार है। सूत्रों के मुताबिक नई नीति के तहत आला दर्जे की पाण्डुलिपि के लिए होनहार लेखकों को प्रेरित व प्रोत्साहित किया जाएगा। प्रकाशकों से लेखकों के समयबद्ध भुगतान का खयाल भी रखा जाएगा। प्रकाशकों को व्यावसायिक तौर-तरीकों के दायरे में रखने पर जोर होगा। जरूरत हुई तो लेखक व प्रकाशक के बीच पुस्तक का मूल्य तय करने के मामले में सरकारी प्राधिकरण सुझाव भी दे सकता है। उल्लेखनीय है कि मानव संसाधन विकास मन्त्री कपिल सिब्बल ने राष्ट्रीय संवर्धन नीति तैयार करने के लिए इसी साल फरवरी में टास्क फोर्स का गठन किया था। उसने नीति का मसौदा तैयार कर दिया है। सूत्र बताते हैं कि टास्क फोर्स ने भारतीय प्रकाशन जगत में लेखकों व प्रकाशकों के बीच की विसंगतियों को दूर करने और घटिया किताबों के प्रकाशन को रोकने के लिए पुस्तक प्रकाशन नियामक प्राधिकरण बनाने की सिफारिश की है। उसने इसके लिए पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में अमेरिकी व्यवस्था का हवाला दिया है। अमेरिका में इसके लिए सरकारी तन्त्र तो नहीं है, लेकिन खुद प्रकाशकों ने ही प्रकाशन मानक बोर्ड बना रखा है।

भोपाल में देश का दूसरा हिन्दी विश्वविद्यालय

भोपाल में देश का दूसरा हिन्दी विश्वविद्यालय मध्य प्रदेश में खुलेगा। प्रदेश की मन्त्रिपरिषद ने हिन्दी दिवस पर यह फैसला किया है। इस पर अमल के लिए देश के प्रमुख हिन्दी-विद्वानों की कमेटी गठित करने के प्रस्ताव को मुख्यमन्त्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने हरी झण्डी दिखा दी है। कमेटी के गठन का आदेश शीघ्र ही जारी हो जाएगा। कमेटी में बनारस हिन्दू विश्वविद्याल के कुलपति, साहित्यकार डॉ० रामेश्वर मिश्र 'पंकज', कुसुमलता केडिया, मोहनलाल छीपा व कुछ अन्य विद्वानों को शामिल किया जाएगा।

ऑस्कर का दावा पेश करेगी 'पीपली लाइव'

कर्ज में डूबे किसानों की समस्याओं का चित्रण करने वाली आमिर खान की चर्चित फिल्म 'पीपली लाइव' ऑस्कर पुरस्कार की होड़ में शामिल होगी। 'पीपली लाइव' वर्ष 2011 के ऑस्कर पुरस्कारों के लिए सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म की श्रेणी में भारत की आधिकारिक एंट्री होगी।

विश्व की सबसे महँगी पुस्तक नीलाम होगी

विश्व की सबसे महँगी पुस्तक की ब्रिटेन के सोदबी नीलामीघर में 60 लाख पाउंड में बिकने की सम्भावना है। सोदबी ने बताया कि जॉन जेम्स औडुबोन की सात खण्ड की 'बर्ड ऑफ अमेरिका' नामक पुस्तक विलियम शेक्सपियर की फर्स्ट फोलियो जैसी साहित्यिक पुस्तकों के साथ बिकेगी। यह पुस्तक 19वीं सदी की है। औडुबोन की इस पुस्तक की 100 प्रतियाँ हैं। ये पुस्तकें 90 सेंटीमीटर लम्बी और 60 सेंटीमीटर चौड़ी हैं।

हिटलर की पेंटिंग्स की नीलामी होगी

तानाशाह एडोल्फ हिटलर की बनाई गई पेंटिंग्स के एक दुर्लभ संग्रह की इस माह नीलामी होने जा रही है। ये पेंटिंग्स उन दिनों की हैं जब हिटलर बतौर पेंटर संघर्ष कर रहा था। हिटलर के तैलचित्रों में खेत-खलिहानों, चरगाहों, गिरिजाघरों, गाँव के दृश्यों और एक कतार में स्थापित फैक्टरियों का विशेष रूप से चित्रण मिलता है।

जर्मनी में हिन्दी की लोकप्रियता

जर्मनी में हिन्दी को भारत की अधिकांश जनता से सम्पर्क साधने का एक मात्र साधन माना जाता है। वहाँ के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में हिन्दी कक्षाएँ चलायी जा रही हैं। भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के सहयोग से हिन्दी और संस्कृत के लिये शिक्षकों की नियुक्ति की जाती है।

जर्मनी में हिन्दी फिल्मों को देखने-समझने की इच्छा की पूर्ति हेतु हिन्दी साहित्य में रुचि बढ़ाने और व्यापार विकसित करने के लिए हिन्दी का प्रचार-प्रसार आवश्यक माना गया है। व्यापार बढ़ाने के लिए वे मानते हैं कि या तो जिन भारतीयों को वे नियुक्त करें उन्हें अच्छी जर्मन आनी चाहिए या जर्मन अधिकारियों और व्यापारियों को अच्छी हिन्दी आनी चाहिए।

अमेरिका में एम०बी०ए० छात्रों को हिन्दी पढ़ाना आवश्यक

भारत को मजबूत अर्थव्यवस्था के रूप में अग्रसर होते देख एक प्रमुख अमेरिकी विश्वविद्यालय ने दो वर्षीय हिन्दी पाठ्यक्रम शुरू करने की योजना बनायी है। यह पाठ्यक्रम युनिवर्सिटी ऑफ पेनसेल्वेनिया के लाउडर इंस्टीट्यूट में चलाया जायेगा।

यह हिन्दी पाठ्यक्रम 2011 में शुरू करने की योजना है जिसमें एम०बी०ए० के छात्रों हेतु हिन्दी भाषा, भारतीय संस्कृति का अध्ययन, राजनीति, मूल्य और व्यापार से सम्बन्धित कई विषय होंगे।

फादर कामिल बुल्के की प्रतिमा का अनावरण

वर्धा, 2 अक्टूबर, विश्वप्रसिद्ध हिन्दीसेवी, रामकथा के विशेषज्ञ और शब्दकोश-निर्माता फादर कामिल बुल्के के जन्मशताब्दी वर्ष में महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं प्रख्यात आलोचक डॉ० नामवर सिंह ने विश्वविद्यालय परिसर में निर्मित फादर कामिल बुल्के अन्तर्राष्ट्रीय छात्रावास का उद्घाटन किया और उनकी प्रतिमा का भी अनावरण किया।

गिनीज बुक कैसे बनी ?

सन् 1951 की बात है। ह्यूज बीवर उन दिनों गिनीज ब्रेवरीज में काम करते थे। एक दिन वे अपने दोस्तों के साथ चिड़ियों का शिकार करने के लिए निकले। युवा शिकारियों का यह दल कुछ समझ पाता इससे पहले ही उसके सामने से चिड़ियाओं का एक झुण्ड बहुत तेजी से निकला। ह्यूज और उनके दोस्त हैरत में पड़ गए कि आखिर ये कौन-सी चिड़ियाएँ थीं जो इतनी तेजी से उड़ती हैं। कुछ का अंदाजा था कि वह बया जैसा कोई पक्षी था जबकि कुछ कह रहे थे कि वह तीतर से मिलती कोई प्रजाति थी। यह तय नहीं हो पाया कि आखिर वे कौन-सी चिड़ियाएँ थीं। ह्यूज ने आकर यह पता लगाने के लिए किताबें अलटी-पलटी कि आखिर यूरोप का सबसे तेज उड़ने वाला पक्षी कौन-सा है। कई किताबें उलटने के बाद भी उन्हें अपनी जिज्ञासा का उत्तर नहीं मिला। ह्यूज अपने काम में लगे रहे। 1954 में एक किताब में उन्होंने प्रश्न का उत्तर पाया, यह भी कोई बहुत प्रामाणिक उत्तर नहीं था।

इस पूरी घटना से ह्यूज बीवर के मन में यह बात आई कि कई लोगों के मन में इस तरह के प्रश्न उठते होंगे और उनका उत्तर न मिलने पर इन्हें कितनी निराशा होती होगी। ह्यूज ने यह विचार अपने मित्रों को सुनाया। मित्र ने उन्हें नोरिस और रॉस मविक्टर नाम के दो युवकों से मिलवाया। ये दोनों लन्दन में एक तथ्यों का पता लगाने वाली एजेंसी के लिए काम करते थे। तीनों ने मिलकर 1955 में पहली गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स निकाली और धीरे-धीरे यह नई किताब लोगों को इतनी पसन्द आने लगी कि इसकी प्रतियाँ हर साल बढ़ती गईं।

आज इस रिकॉर्ड बुक में नाम दर्ज करवाने के लिए दुनियाभर के लोग उत्सुक रहते हैं और तरह-तरह के काम करते हैं। ह्यूज एक मुश्किल में जरूर पड़े किन्तु उससे एक नया रास्ता निकला। याद रहे, हर मुश्किल के पास सिखाने के लिए बहुत कुछ होता है।

बौद्ध कापालिक साधना और साहित्य

डॉ० नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

''यह ग्रन्थ बौद्ध साधना और साहित्य के अनेक अछूते, विस्मृत, तिरस्कृत और महत्त्वपूर्ण सूत्रों को एकत्रित कर उनका व्यवस्थापन करते हुए बौद्धों के कापालिकतत्त्व का स्वरूप प्रस्तुत करता है। सामान्यतया केवल शैवों में ही कापालिकों की स्थिति माननेवालों को इस ग्रन्थ से नया प्रकाश, नई सूचनाएँ एवं भारतीय कापालिक साधना का एक नया स्वरूप देखने को मिलेगा।''

आकार डिमाई

पृष्ठ 290 + 6 पृष्ठ चित्र

सजिल्द : 978-81-7124-684-7 • रु० 300.00

(पुस्तक के एक अध्याय का अंश)

तंत्र : शैव-शाक्त तंत्र और बौद्ध तंत्र

सामान्यतया तांत्रिक बौद्ध मत की उत्पत्ति और विकास के संबंध में विचार करते समय प्राय: विद्वान् बुद्ध के कथनों और उपदेशों पर विचार न कर उनसे संबंधित साहित्य को ध्यान में रखते हुए यह सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं कि बुद्ध ने तांत्रिक साधनाओं का अथवा जादू, टोने से संबंधित कुछ क्रियाओं का समर्थन किया था। दूसरे विद्वान् यह सिद्ध करते हैं कि बुद्ध ने जादू, टोना, चमत्कार, सिद्धि आदि का घोर विरोध करते हुए भिक्षुओं को उनसे दूर रहने के लिए कहा था। इन दो मतों को सामने रखते हुए भी यह जानना सर्वप्रथम आवश्यक है कि वस्तुत: तंत्र, तांत्रिक साधना और मत की वे कौन-सी विशेषताएँ थीं, जिनका साहित्य में प्राय: संधान कर लोग उसे तांत्रिक साहित्य कहा करते हैं।

हिन्दू तांत्रिक साहित्य का पर्यवेक्षण कर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि तंत्र सामान्य विश्वास और रुचि के सभी विषयों का विवेचन करते हैं। इन विषयों का विस्तार बहुत अधिक है। इसके अन्तर्गत सृष्टि संबंधी सिद्धान्त, समाज और उसके दिव्यशक्ति द्वारा नियुक्त शासकों के नियामक नियम, चिकित्सा, विज्ञान, मंत्र, तत्त्व, योग आदि हैं। तंत्र परमतत्त्व सृष्टि, विश्व, विश्वसंहार, देवोत्पत्ति और देवपूजा, प्राणियों के विभाग, दिव्य प्राणी, विभिन्न लोक, नर और नारी, विभिन्न युगों के धर्म और नियम, शरीरस्थ विभिन्न चक्र, आश्रम, संस्कार, देवताओं के स्वरूप, मंत्र, यंत्र, मुद्रासाधना, पूजा और उपासना के विविध रूप (बाह्य अथवा आन्तरिक) आदि का भी विवरण और विधान करते हैं। वाराही तंत्र के अनुसार आगम के छह विषय हैं—सृष्टि, प्रलय, देवताओं की अर्चना, साधन, पुरश्चरण, षटकर्म और ध्यानयोग। महानिर्वाण तंत्र में चार युगों, तीन आचारों, कालयुगोचित तंत्र की महत्ता, ब्रह्मस्वरूप ब्रह्म मंत्र, न्यास, प्राणायाम, ध्यान, बाह्य एवं आन्तरिक पूजा, पंचरत्न, कवच, संध्या, गायत्री, पुरश्चरण, दीक्षा, शक्तिसाधना, कुलाचार, मंत्र और उसकी शुद्धि, गुरु, मंत्र, पंचमकार भेद और उनकी शुद्धि, बलि, हवन, कर्मकाण्ड, वर्ण, आश्रम, तीर्थयात्रा, स्त्री-राजा-सेवक के कर्तव्य, विवाह, भैरवी चक्र, दस संस्कार, श्राद्ध, गृहप्रवेश, पूर्णाभिषेक, पशु, वीर, कौल, कुलधर्म तथा आचार, प्रायश्चित्त, सनातन धर्म, देवप्रतिष्ठा, देवार्पित सम्पत्ति, मंदिर आदि, वाहनपूजा, शिवलिंग प्रतिष्ठा, अवधूत जैसे अनेक विषयों का विस्तार मिलता जिसमें इनसे संबंधित क्रियाविधानतंत्र एवं मंत्रविधान का भी समायोग है।

उपर्युक्त विषयों को देखने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि तंत्र जादू नहीं है और न प्राचीन जादू से उसका विकास ही हुआ है। डॉ. विनयतोष भट्टाचार्य तो जादू से ही उसका विकास मानते हैं और मूलत: इसे आर्यागम से पूर्व की संस्कृति का दान मानते हैं। इसी परंपरा में वे हिन्दू तंत्र और बौद्ध तंत्र का विकास मानते हैं। उनका स्पष्ट मत है कि बौद्ध तंत्र बाह्य रूप की दृष्टि से कुछ सीमा तक हिन्दू तंत्रों के समान दिखाई पड़ते हैं किन्तु वस्तुत: उनमें न तो विषयवस्तु की दृष्टि से, न दार्शनिक धार्मिक सिद्धान्तों की दृष्टि से समानता है। इस पर आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि बौद्धों और हिन्दुओं, दोनों के लक्ष्य और उद्देश्य दोनों ही सर्वथा भिन्न हैं। हिन्दू तंत्रों के लिए प्रयुक्त की जाने वाली परिभाषा बौद्ध तंत्रों के लिए संगत नहीं हो सकती। वे तंत्र आगम और यामल में भी भेद करते हैं और तांत्रिक साहित्य के अन्तर्गत रसायन, चिकित्सा, शकुनपरीक्षण, भविष्यवाणी, ज्योतिष, नक्षत्रविज्ञान तथा इसी प्रकार के अन्य विषयों को भी मानते हैं। समान प्रकार की विशेषताएँ बौद्धों के तंत्र में भी दिखाई पड़ती हैं जिसका प्रमाण तिब्बती तेन्-जुर की सूची में मिलता है। हिन्दुओं के नाम से जो तंत्र प्रसिद्ध हुए, उनका उदय बौद्धों के तांत्रिक विचारों के तुरंत बाद हुआ और फिर उन लोगों ने अपने को प्रतिष्ठित कर लिया जब कि बौद्धों ने अनेक पौराणिक हिन्दू देवी-देवताओं का अपने देवताओं के साथ समायोग कर लिया था। इस प्रकार डॉ. भट्टाचार्य हिन्दू और बौद्ध तंत्रों में परस्पर आदान-प्रदान स्वीकार करते हैं। डॉ. शशिभूषण दासगुप्त ने हिन्दू और बौद्ध तंत्रों की परस्पर समानता का उल्लेख करते हुए उनमें तात्विक भेद नहीं माना। बौद्ध मत ने स्वयं अपनी सामग्री में तथा अपने ही अन्दर से अपने तंत्र का विकास नहीं किया। एक धर्मविज्ञान के रूप में तंत्र का अपना एक स्वतंत्र इतिहास है। महायान बौद्ध धर्म के वैशिष्ट्य उसकी उदार चित्तता के संदर्भ में ही तंत्र और बौद्ध धर्म के संयोग की व्याख्या की जा सकती है। उन्होंने विस्तार से दोनों तांत्रिक धर्मों की समानता का विवेचन किया है। उनकी दृष्टि में बौद्ध तंत्रों में तीन तत्त्व हैं—(१) बौद्ध विचारणा से तथा विशेषकर महायान से तथा साथ ही हिन्दू विचारणा से भी ग्रहण किए गए अव्यवस्थित तत्त्ववैज्ञानिक अंश, (२) एक तांत्रिक धर्मविज्ञान, जो यद्यपि सारत: हिन्दू तंत्रों के समान है, तथापि उसने परवर्ती महायानी विचारों को भी ग्रहण किया। (३) साधनाएँ। हिन्दू तंत्रों में तत्त्वत: धर्मवैज्ञानिकता तो है ही, साथ ही उनमें वेदांत, योग-सांख्य, न्याय-वैशेषिक और पुराण ही नहीं, चिकित्सा विज्ञान और धर्मशास्त्रीय ग्रंथों के भी विचार यत्र-तत्र बिखरे मिलते हैं। ठीक उसी प्रकार बौद्ध तंत्रों में भी महायान बौद्ध धर्म के प्रमुख मतों के वे तत्त्ववैज्ञानिक विचार ग्रहण किए गए मिलते हैं जिनके ऊपर औपनिषद अद्वैतवाद का प्रभाव है। ज्ञात-अज्ञात रूप में शून्यवाद, विज्ञानवाद और वेदान्त के विचार बिना भेद किए साथ-साथ रखे गए हैं और इस प्रकार वे सब विचार एक-दूसरे से घुलमिल गए हैं। प्राचीन बौद्ध धर्म के भी सिद्धान्त, महायानी, ब्राह्मण तथा अन्य भारतीय सांख्य, योग जैसे मतों के भी सिद्धान्त विमिश्रित रूप में इधर-उधर बिखरे हुए हैं। इन सारे स्रोतों की ओर संकेत करते हुए भी डॉ. शशिभूषण दास गुप्त ने कहीं भी शैव प्रभाव एवं स्रोत की ओर संकेत नहीं किया। वैसे उन्होंने जो स्रोत बताए हैं वे सामान्य रूप से शैवों के भी स्रोत सिद्ध किए जाते हैं। डॉ. दासगुप्त और डॉ. विनयतोष भट्टाचार्य के मतों की तुलना करने से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि तांत्रिक बौद्ध धर्म के विकास में डॉ. भट्टाचार्य स्पष्टतया बौद्धेतर स्रोतों को उतना महत्त्व नहीं देते और तांत्रिक धारा को भी गौणता तथा बौद्ध तंत्र को प्रामुख्य देते दिखाई पड़ते हैं। ठीक इसके विपरीत डॉ. दासगुप्त तंत्र का एक स्वतंत्र इतिहास मानते हैं और उसका हिन्दू तथा बौद्ध धर्मविज्ञान दोनों पर प्रभाव मानते हुए बौद्धों पर हिन्दू स्रोतों के प्रभाव को प्रमुखता देते दिखाई पड़ते हैं।...

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

सम्मान-पुरस्कार

मारियो वर्गास को साहित्य का नोबेल

स्पेनिश भाषा के जाने-माने लेखक मारियो वर्गास लोसा को वर्ष 2010 के लिए साहित्य का नोबेल पुरस्कार देने की घोषणा की गई है। स्वीडिश एकेडमी ने गुरुवार को कहा कि पेरू के 74 वर्षीय लेखक को सत्ता के ढाँचे तथा उसके प्रति व्यक्तियों के प्रतिरोध, विद्रोह एवं पराजय की प्रभावशाली तस्वीर पेश करने के लिए यह पुरस्कार दिया जा रहा है।

लोसा ने 'कनवर्सेशन इन कैथेड्रल' और 'द ग्रीन हाउस' समेत 30 से अधिक उपन्यास और लेख लिखे हैं। सन् 1995 में उन्हें विश्व में स्पेनिश भाषा के सबसे प्रतिष्ठित पुरस्कार सरवेंटेज पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वह सन् 1960 के दशक में अपने 'द टाइम ऑफ द हीरो' उपन्यास से दुनिया की नजर में आए थे।

प्रो० राज बिसारिया को आदित्य बिरला कलाशिखर पुरस्कार

लखनऊ, भारतेन्दु नाट्य अकादमी के संस्थापक निदेशक प्रो० राज बिसारिया को उनके जन्मदिन की पूर्व संध्या पर एक तोहफा मिला। उन्हें वर्ष 2010 के 'आदित्य विक्रम बिरला कलाशिखर पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। मुम्बई स्थित टाटा थिएटर में यह पुरस्कार दिया जाएगा।

डॉ० बायती सम्मानित

एन०सी०ई०आर०टी० नई दिल्ली से तीन बार पुरस्कृत एवं चालीस पुस्तकों के लेखक श्री प्रो० (डॉ०) जमनालाल बायती को राष्ट्र भाषा स्वाभिमान न्यास, गाजियाबाद द्वारा राष्ट्र स्तरीय कबीर सम्मान से सम्मानित किया गया है। डॉ० बायती को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न तथा शाल ओढ़ा कर सम्मानित किया गया।

'स्व० लक्ष्मण प्रसाद मंडलोई स्मृति सम्मान' आशीष त्रिपाठी को

युवा कवि और समीक्षक आशीष त्रिपाठी के काव्य संग्रह 'एक ठहरा हुआ रंग' का वर्ष 2010 के पाँचवें स्व० लक्ष्मण प्रसाद मंडलोई स्मृति सम्मान हेतु चयन किया गया है। यह सम्मान प्रतिवर्ष की भाँति दिसम्बर 2010 में स्व० मंडलोई के गृहनगर छिन्दवाड़ा में दिया जायेगा।

'काका हाथरसी सम्मान'

14 नवम्बर को दिल्ली के हिन्दी भवन में आयोजित एक गरिमामय समारोह में कवि श्री प्रवीण शुक्ल को पैंतीसवाँ 'काका हाथरसी पुरस्कार' प्रदान किया गया। पुरस्कार-स्वरूप उन्हें एक लाख रुपये की नकद राशि, श्रीफल, अंगवस्त्र और प्रशस्ति-पत्र पूर्व लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़ द्वारा दिए गए। इस अवसर पर पुरस्कृत कवि श्री प्रवीण शुक्ल की पुस्तक 'गाँधी और मैनेजमेंट' का लोकार्पण भी किया गया।

संगीत-पुस्तकों के जाने माने लेखक एवं संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ द्वारा सम्मानित पं० हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव को 2009 के काका हाथरसी सम्मान से सम्मानित किया गया। उन्हें प्रशस्तिपत्र, श्रीफल एवं श्वेत शाल के साथ पच्चीस हजार रुपये प्रदान किये गये।

पं० प्रतापनारायण मिश्र स्मृति युवा-साहित्यकार सम्मान

लखनऊ में भाऊराव देवरस सेवा न्यास द्वारा आयोजित 16वें पं० प्रताप नारायण मिश्र स्मृति युवा-साहित्यकार सम्मान-समारोह 2010 में अखिल भारत स्तर पर विचारात्मक मौलिक रचना करने वाले 40 वर्ष तक की आयु के 6 साहित्यकार सम्मानित किए गए। श्री अरविन्द कुमार सोनकर (लखनऊ) को काव्य विधा में, श्री दिनेश कर्नाटक (नैनीताल) को कथा-साहित्य विधा में, सुश्री गीतिका सिंह (दिल्ली) को बाल-साहित्य विधा में, डॉ० मुकुल श्रीवास्तव (लखनऊ) को पत्रकारिता में, डॉ० धीरेन्द्र झा (पटना) को संस्कृत भाषा में तथा भोजपुरी भाषा में श्री मनोज भावुक (नोएडा) को पं० प्रतापनारायण मिश्र स्मृति-युवा-साहित्यकार सम्मान से विभूषित किया गया। सम्मान स्वरूप सभी साहित्यकारों को सरस्वती प्रतिमा, न्यास का प्रतीक चिह्न, अंगवस्त्र तथा पाँच हजार रुपये की मानराशि प्रदान की गई।

अब्दुल बिस्मिल्लाह को कथाक्रम सम्मान

विगत दिनों लखनऊ में वर्ष 2010 का 'आनन्द सागर स्मृति कथाक्रम सम्मान' वरिष्ठ और चर्चित कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह को दिया गया।

कथाक्रम समिति के संरक्षक प्रख्यात कथाकार श्रीलाल शुक्ल की अध्यक्षता में समिति ने यह निर्णय लिया था। समिति के अन्य सदस्यों में कथाक्रम संयोजक शैलेन्द्र सागर, वरिष्ठ कहानीकार शिवमूर्ति, प्रखर समीक्षक सुशील सिद्धार्थ एवं चर्चित लेखिका रजनी गुप्त हैं।

आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी का सम्मान समारोह सम्पन्न

आन्ध्र प्रदेश अकादमी, हैदराबाद द्वारा हिन्दी दिवस की पूर्वसंध्या पर अकादमी भवन में हिन्दी उत्सव का आयोजन किया गया और समारोहपूर्वक 2010 के हिन्दी पुरस्कार पाँच सम्मानित हिन्दीसेवियों तथा साहित्यकारों को समर्पित किए गए।

एक लाख रुपए का पद्मभूषण मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार अष्टावधान विधा को लोकप्रिय बनाने के उपलक्ष्य में डॉ० चेबोलु शेषगिरि राव को प्रदान किया गया। तेलुगुभाषी उत्तम हिन्दी अनुवादक और युवा लखक के रूप में इस वर्ष क्रमश: वाई०सी०पी० वेंकट रेड्डी और डॉ० सत्यलता को सम्मानित किया गया। डॉ० किशोरी लाल व्यास को दक्षिण भारतीय भाषेतर हिन्दी लेखक पुरस्कार प्राप्त हुआ तथा विगत दो दशक से दक्षिण भारत में रहकर हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा कर रहे डॉ० ऋषभ देव शर्मा को बतौर हिन्दी भाषी लेखक पुरस्कृत किया गया। इन चारों श्रेणियों में पुरस्कृत प्रत्येक साहित्यकार को पच्चीस हजार रुपए तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए।

जसप्रीत कौर जस्सी को 'भारत भूषण'

समग्रता शिक्षा साहित्य एवं कला परिषद्, कटनी (मध्यप्रदेश) द्वारा जसप्रीत कौर जस्सी की रचनात्मकता का सम्मान करते हुए उन्हें 'भारत-भूषण' की मानद उपाधि प्रदान की गयी।

महुआ माजी को विश्व हिन्दी सेवा सम्मान

उज्जैन में अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद और विश्व हिन्दी सेवा सम्मान अलंकरण समारोह का आयोजन हुआ। परिसंवाद 'विश्व पटल पर हिन्दी का बदलता स्वरूप' पर एकाग्र था। इस अवसर पर उत्कृष्ट हिन्दी सेवा के लिए देश दुनिया के अनेक साहित्यकारों, संस्कृतकर्मियों और हिन्दीसेवियों को विश्व हिन्दी सेवा सम्मान से विभूषित किया गया। समारोह उज्जैन स्थित कालिदास संस्कृत अकादमी में दो सत्रों में सम्पन्न हुआ।

यहाँ सम्मानित हुए लोगों में अपने पहले ही उपन्यास से चर्चा में आई महुआ माजी (रांची), विदेश में हिन्दी का ध्वज फहरानेवाली लेखिका डॉ० अंजना संधीर (यू०एस०ए०), नवनीत के सम्पादक श्री विश्वनाथ सचदेव (मुंबई), श्री इडियट के गीतकार स्वानंद किरकिरे, सिनेजगत की मशहूर गायिका कविता सेठ, कवि देवमणि पाण्डे, डॉ० त्रिभुवननाथ शुक्ल (भोपाल), ऐतिहासिक उपन्यासकार डॉ० शरद पगारे, गीतकार चंद्रसेन विराट (मुंबई), भडास फार मीडिया के यशवंत सिंह (दिल्ली), आचार्य एवं समीक्षक डॉ० शैलेन्द्रकुमार शर्मा (उज्जैन), कथाकार एच०आर० हरनोट (शिमला), डॉ० करुणाशंकर उपाध्याय (मुंबई), गायत्री शर्मा आदि शामिल हैं। 'विश्व पटल पर हिन्दी का बदलता स्वरूप' पर एकाग्र परिसंवाद वरिष्ठ पत्रकार श्री विश्वनाथ सचदेव (मुंबई) की अध्यता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर महुआ माजी ने कहा कि सिर्फ अपनी बौद्धिकता सिद्ध करने के लिए हिन्दी को बिना वजह दुरूह न बनाएँ और इसे आम लोगों की भाषा के करीब रखें।

भगवानदास मोरवाल को जनकवि मेहरसिंह सम्मान

उपन्यासकार-कहानीकार भगवानदास मोरवाल को विगत दिनों चण्डीगढ़ में पहला जनकवि मेहरसिंह सम्मान प्रदान किया गया।

शिक्षामन्त्री, हरियाणा के हाथों एक लाख

रुपए का यह पुरस्कार उन्हें मेवात की कला और संस्कृति के विकास के लिए प्रदान किया गया।

श्री मोरवाल के तीन उपन्यास व कई कहानी-संग्रह प्रकाशित हैं। गत वर्ष प्रकाशित उनका उपन्यास 'रेत' अत्यन्त लोकप्रिय और चर्चित रहा।

20वाँ 'आनन्द ऋषि साहित्य पुरस्कार' डॉ० दामोदर खड़से को

आचार्य आनन्द ऋषि साहित्य निधि, हैदराबाद के तत्वावधान में आयोजित समारोह में 20वाँ 'आनन्द ऋषि साहित्य पुरस्कार' पुणे निवासी मराठी भाषी डॉ० दामोदर खड़से को प्रदान किया गया। इस पुरस्कार में 25 हजार रुपये की धनराशि, शाल, प्रशस्ति-पत्र एवं आचार्यश्री का साहित्य सम्मिलित है।

प्रथम सीता स्मृति सम्मान कवि दिनेश कुमार शुक्ल को

18 अक्टूबर को नई दिल्ली में पहला 'सीता स्मृति सम्मान' श्री दिनेश कुमार शुक्ल को उनके काव्य-संग्रह 'ललमुनिया की दुनिया' के लिए देने की घोषणा की गई। शिक्षाविद् और लेखक स्व० सीता श्रीवास्तव की स्मृति में उनके परिवार की ओर से प्रारम्भ किया गया यह पुरस्कार हर वर्ष हिन्दी के किसी लेखक को गद्य या कविता के लिए दिया जाएगा। पुरस्कारस्वरूप प्रशस्ति-पत्र और 51 हजार रुपये की राशि दी जाएगी।

स्पंदन के पुरस्कार घोषित

17 अक्टूबर को ललित कलाओं के लिए समर्पित भोपाल की 'स्पंदन' द्वारा स्थापित पुरस्कारों की श्रृंखला में 'स्पंदन सृजनात्मक पत्रकारिता पुरस्कार 2010' के लिए पत्रिका 'उद्भावना' के सम्पादक श्री अजेय कुमार को, ललित कलाओं हेतु 'स्पंदन आलोचना पुरस्कार-2010' के लिए कथाकार डॉ० रोहिणी अग्रवाल तथा 'स्पंदन चित्रकला पुरस्कार-2010' के लिए युवा चित्रकार श्री मनीष पुष्कले को, 'स्पंदन कृति पुरस्कार-2010' के लिए हिन्दी की बहुचर्चित कथाकार-कवयित्री श्रीमती अनामिका को उनके उपन्यास 'दस द्वारे का पिंजरा' हेतु तथा युवा चर्चित कवि, लेखक तथा समाज वैज्ञानिक श्री बद्रीनारायण को उनके कविता संग्रह 'खुदाई में हिंसा' हेतु ग्यारह-ग्यारह हजार रुपये की राशि, शाल, श्रीफल तथा स्मृति-चिह्न दिसम्बर में आयोजित होने वाले कार्यक्रम में दिए जाएँगे।

डॉ० माणिक मृगेश सम्मानित

विगत दिनों रामप्रसाद मिश्र स्मृति संस्थान, आणंद द्वारा वडोदरा में आयोजित भव्य समारोह में राजभाषा के प्रसार-प्रचार में अप्रतिम योगदान के लिए प्रख्यात साहित्यकार डॉ० शिव कुमार मिश्र ने डॉ० माणिक मृगेश को शॉल, श्रीफल अर्पण कर सम्मानित किया।

सौ० शुभांगी भडभडे एवं डॉ० देवीप्रसाद गुप्त सम्मानित

बीकानेर में अखिल भारतीय साहित्य परिषद् राजस्थान एवं अमरनाथ कश्यप फाउंडेशन की ओर से मरुधर हेरिटेज परिसर में आयोजित साहित्यकार सम्मेलन में स्व० पं० हीरालाल शुक्ल रामेश्वरी देवी स्मृति सम्मान से सन्तों-महापुरुषों के जीवन पर उपन्यास रचने के लिए मराठी लेखिका सौ० शुभांगी भडभडे को सम्मानित किया गया। उन्हीं के हाथों साहित्य परिषद, बीकानेर विभाग के संयोजक श्री संजीव कश्यप की पुस्तक 'समग्र योग दर्शन' का भी लोकार्पण हुआ। इस अवसर पर मनीषी, समालोचक डॉ० देवीप्रसाद गुप्त प्रान्तीय सम्मान से सम्मानित हुए।

बाल-साहित्यकार डॉ० दर्शनसिंह 'आशट' को 'सृजन सम्मान'

भाषा विभाग, पंजाब द्वारा शिरोमणि, बाल-साहित्य लेखक-सम्मान से अलंकृत और पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में कार्यरत डॉ० दर्शनसिंह 'आशट' को उनकी उल्लेखनीय बाल-साहित्य सेवाओं के लिए सहारनपुर (उत्तर प्रदेश) की संस्था 'समन्वय' द्वारा सम्मानित किया गया।

वर्ष 2010 का 'उदयराज सिंह स्मृति सम्मान' चित्रा मुद्गल को

पटना, हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती चित्रा मुद्गल को 'नई धारा' साहित्यिक पत्रिका द्वारा वर्ष 2010 का चतुर्थ 'उदयराज सिंह स्मृति सम्मान' देने की घोषणा की गई है, जिसके तहत उन्हें एक लाख रुपए सहित सम्मान पत्र, स्मृति चिह्न आदि अर्पित किए जाएँगे। इसके साथ ही चर्चित उपन्यासकार डॉ० भगवतीशरण मिश्र, प्रसिद्ध आलोचक डॉ० गोपाल राय तथा कहानीकार श्री जियालाल आर्य वर्ष 2010 के 'नई धारा रचना सम्मान' से सम्मानित किये जाएँगे। इसके तहत प्रत्येक लेखक को 25-25 हजार रुपए सहित सम्मान पत्र, प्रतीक चिह्न आदि समर्पित किए जाएँगे।

राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान

संसदीय हिन्दी परिषद, परिचय साहित्य परिषद व विधि भारतीय परिषद के तत्त्वावधान में 'राष्ट्रभाषा उत्सव-2010' का आयोजन किया गया।

समारोह में कुछ गणमान्य साहित्यकारों को 'राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया तथा इस वर्ष पहली बार मीडियाकर्मियों को भी 'राष्ट्रभाषा मीडिया सम्मान' से सम्मानित किया गया। साहित्यकारगण श्रीमती शांति अग्रवाल, श्री अशोक खन्ना, श्रीमती सविता चड्ढा, डॉ० धर्मवीर, श्री अनिल वर्मा 'मीत' व सुश्री सूरज मणि स्टेला को 'राष्ट्रभाषा गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया। मीडिया से जुड़े विशिष्ट हस्ताक्षरों श्रीमती रमा पाण्डेय व सुश्री कनुप्रिया को 'राष्ट्रभाषा मीडिया सम्मान' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त कुछ पुस्तकों का लोकार्पण भी अध्यक्ष प्रो० विजय कुमार के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

नवभारत टाइम्स, मुम्बई के सम्पादक शचीन्द्र त्रिपाठी को पत्रकारिता सम्मान

शचीन्द्र त्रिपाठी भाषा, भाव और विचार से समृद्ध उच्चकोटि के पत्रकार हैं। मूल्यों के प्रति समर्पित शचीन्द्र त्रिपाठी के पास अपना नजरिया और अपना दृष्टिकोण है। तीस साल पहले टाइम्स ऑफ इण्डिया मुम्बई के लोकप्रिय हिन्दी दैनिक नवभारत टाइम्स में उपसम्पादक के रूप में शुरू हुई उनकी यात्रा आज स्थानीय सम्पादक के रूप में शिखर पर पहुँच चुकी है। मुम्बई महानगर की प्रतिष्ठित संस्था तरुण कला संगम की ओर से 24 सितम्बर को प्रमुख लेखकों-पत्रकारों की उपस्थिति में आयोजित एक समारोह में शचीन्द्र त्रिपाठी को पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मुम्बई प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कृपाशंकर सिंह और संस्थाध्यक्ष चित्रसेन सिंह ने सम्मानस्वरूप उन्हें शाल, श्रीफल, स्मृति चिह्न और 21 हजार की धनराशि भेंट की।

मनोज भावुक विश्व भोजपुरी सम्मेलन दिल्ली के अध्यक्ष बने

विश्व भोजपुरी सम्मेलन की झारखण्ड इकाई द्वारा विगत दिनों राँची में सम्मेलन की कार्यकारिणी के राष्ट्रीय अधिकारियों की एक महत्त्वपूर्ण बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से युवा कवि मनोज भावुक को विश्व भोजपुरी सम्मेलन की दिल्ली इकाई का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। मनोज इससे पहले विश्व भोजपुरी सम्मेलन की ग्रेट ब्रिटेन इकाई के अध्यक्ष एवं अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के प्रबन्ध मन्त्री रह चुके हैं।

जैकबसन को मिला बुकर पुरस्कार

हास्य उपन्यास 'द फिंकलर क्वेश्चन' के लिए 58 वर्षीय ब्रिटिश लेखक हावर्ड जैकबसन को वर्ष 2010 का प्रसिद्ध मैन बुकर पुरस्कार लंदन में दिया गया।

बुकर के 42 वर्षों के इतिहास में पहली बार किसी हास्य उपन्यास ने 50 हजार पौंड (करीब 35 लाख रुपये) का पुरस्कार जीता है। इसमें तीन यहूदी मित्रों की कहानी बयान की गई है।

प्रो० एस०आर० सोनी को अवार्ड

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय स्थित संगीत एवं मंच कला संकाय के वोकल म्यूजिक विभाग की प्रो० एस०आर० सोनी को ग्लोरी ऑफ इण्डिया गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया है। यह पुरस्कार नई दिल्ली की संस्था इण्डिया इण्टरनेशनल फ्रेंडशिप सोसाइटी ने प्रदान किया

है। संगीत के प्रति उनकी सेवाओं को देखते हुए संस्था ने उन्हें यह सम्मान दिया है। प्रो० सोनी को जयपुर घराने की ख्याल गायकी में महारत हासिल है। उन्हें देश के विभिन्न संस्थानों की ओर से दर्जनों पुरस्कार मिले हैं।

वैमूरि आंजनेय शर्मा स्मारक पुरस्कार समारोह सम्पन्न

हैदराबाद, 17 अक्टूबर। प्रतिष्ठित हिन्दीसेवी स्व० वेमूरि आंजनेय शर्मा के 94वें जयन्ती समारोह के अवसर पर वेमूरि आंजनेय शर्मा स्मारक ट्रस्ट द्वारा वर्ष 2010 के स्मारक पुरस्कार प्रदान किए गए। जिसमें दस-दस हजार के तीन नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये जाते हैं।

इस वर्ष तेलुगु साहित्य के लिए यह पुरस्कार 83 वर्षीय वरिष्ठ साहित्यकार महामहोपाध्याय डॉ० पुल्लेल श्रीरामचंद्रुडु को प्रदान किया गया। हिन्दी साहित्य के लिए इस वर्ष 'राष्ट्र नायक' पत्रिका के सम्पादक 75 वर्षीय डॉ० हरिश्चन्द्र विद्यार्थी को हैदराबाद में हिन्दी भाषा, साहित्य और पत्रकारिता के उन्नयन के लिए दिया गया। इसी प्रकार प्रसिद्ध तेलुगु रंगकर्मी 75 वर्षीय डॉ० मोदलि नागभूषण शर्मा को अभिनय जगत् में योगदान के लिए पुरस्कृत किया गया।

हरियाणा गौरव सम्मान

हरियाणा साहित्य अकादमी के पूर्व निदेशक डॉ० जयनारायण कौशिक को साहित्य में उनके अतुलनीय योगदान के लिए अकादमी द्वारा आयोजित हिन्दी दिवस समारोह के अवसर पर सन् 2010 के लिए 'हरियाणा गौरव' सम्मान से अलंकृत किया गया तथा प्रतिष्ठित लेखिका श्रीमती कमल कुमार को उनकी साहित्य सेवाओं और साहित्यिक उपलब्धियों के लिए वर्ष 2009-10 के एक लाख रुपये के 'हरियाणा गौरव सम्मान' से सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर 14 अन्य विद्वानों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जिनमें ओमप्रकाश आदित्य तथा अल्हड़ बीकानेरी की स्मृति में स्थापित किए गए पुरस्कार भी सम्मिलित हैं। यह पुरस्कार श्री के०पी० सक्सेना तथा श्रीमती शकुंतला ब्रजमोहन को दिया गया।

पण्डित रविशंकर सम्मानित

ह्यूस्टन, प्रसिद्ध सितारवादक पण्डित रविशंकर को एशिया सोसाइटी ने गत 1 नवम्बर को कल्चरल लीगेसी पुरस्कार प्रदान किया। यह पुरस्कार उन्हें अमेरिका में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रसार के लिए दिया गया।

डॉ० अमरसिंह राठौड़ को हिन्दी सेवी सम्मान, 2010

साहित्यिक पत्रिका 'सम्बोधन' के 46वें वर्ष में प्रवेश करने के उपलक्ष्य में प्रकाशित विशेषांक का लोकार्पण एवं हिन्दी सेवी सम्मान, 2010 के अन्तर्गत राजस्थान सरकार के सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक एवं साहित्यकार डॉ० अमर सिंह राठौड़ को हिन्दी के प्रति की गई अप्रतिम सेवाओं के लिए 'हिन्दी सेवी सम्मान 2010' से समादृत किया गया। अणुव्रत विश्व भारती राजसमन्द के सभागार में आयोजित समारोह में डॉ० राठौड़ को ग्यारह हजार रुपये की नगद राशि, शॉल, प्रशस्ति-पत्र एवं प्रतीक चिह्न भेंट किया गया।

साहित्यकार श्री घमण्डीलाल अग्रवाल पुरस्कृत

22 अक्टूबर को नई दिल्ली में केन्द्रीय जल संसाधन मंत्री श्री पवन कुमार बंसल ने त्रिवेणी सभागार में आयोजित एक समारोह में शिक्षक और लेखक श्री घमंडीलाल अग्रवाल को 'रतन लाल शर्मा स्मृति बाल साहित्य पुरस्कार' से सम्मानित किया, जिसमें 31 हजार रुपये की नकद राशि, प्रतीक चिह्न और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

सुप्रसिद्ध कथाकार श्री अमरकांत को 'व्यास सम्मान'

23 अक्टूबर को इलाहाबाद में सुप्रसिद्ध कथाकार श्री अमरकांत को उनके चर्चित उपन्यास 'इन्हीं हथियारों से' के लिए चन्द्रशेखर आजाद पार्क स्थित संग्रहालय के बृजमोहन व्यास सभागार में आयोजित भव्य समारोह में के०के० बिड़ला फाउण्डेशन की ओर से वर्ष 2009 का 'व्यास सम्मान' प्रदान किया गया। इसमें प्रतीक-चिह्न, प्रशस्ति-पत्र और ढाई लाख रुपये की नगद राशि प्रदान की गई।

श्री त्रिभुवन को 'राजेन्द्र बोहरा काव्य पुरस्कार'

31 अक्टूबर को जयपुर में राजेन्द्र बोहरा स्मृति काव्य पुरस्कार समारोह आयोजित हुआ, जिसमें वरिष्ठ पत्रकार श्री त्रिभुवन को उनकी पहली काव्य-कृति 'कुछ इस तरह आना' के लिए सम्मानित किया गया। अध्यक्षता साहित्यकार श्री नंद भारद्वाज ने की व संचालन श्री प्रेमचंद गाँधी ने किया। पुरस्कार में श्री त्रिभुवन को पाँच हजार रुपये, शॉल व स्मृति-चिह्न प्रदान किए गए।

प्रो० रेवा प्रसाद द्विवेदी को 'पण्डित राज सम्मान'

15 अक्टूबर को संस्कृत कवि व चिन्तक प्रो० रेवा प्रसाद द्विवेदी को देववाणी परिषद्, दिल्ली ने 'पण्डित राज सम्मान' से विभूषित किया। सम्मान परिषद् के अध्यक्ष प्रो० रामकरण शर्मा ने दिया। जनकपुरी स्थित राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में आयोजित इस सम्मान समारोह में संस्थान के कुलपति प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी, सर्वश्री रमाकांत शुक्ल व अजय कुमार शर्मा आदि उपस्थित थे।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का अक्टूबर अंक मिला। एक बार में ही पूरा पढ़ गया। हमेशा की तरह आपका सम्पादकीय मन पर प्रभाव छोड़ता गया। मानवजी का आलेख हिन्दी को और अधिक व्यावहारिक बनाने की प्रेरणा देता है।

—विजय कुमार शर्मा, ग्वालियर

'भारतीय वाङ्मय' का अक्टूबर अंक मिला। सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र द्वारा लिखित 'सतीप्रथा और जौहर का मूल सत्य' शीर्षक निबन्ध दिल को छू गया। रामायण, महाभारत, शिवपुराण, हर्षचरित तथा अन्यान्य कई ग्रन्थों में प्राप्त एतद्विषयक प्रसंगों की समुचित समीक्षा करते हुए विद्वान् लेखक ने 'जौहर' पद की जो व्युत्पत्ति एवं व्याख्या प्रस्तुत की है वह सर्वथा समीचीन और श्लाघनीय है। इतिहास बन चुके इन मार्मिक एवं लोमहर्षक प्रसंगों की आज के आधुनिक युग में भी यदा-कदा आवृत्ति होने के समाचार मिलते रहते हैं। अत: इन पर एवंविध विश्लेषण सर्वथा प्रासंगिक है। एक उत्तम आलेख के लिये लेखक को बधाई। पत्रिका के अन्य स्तम्भ भी प्रभावशाली हैं।

—डॉ० पवनकुमार शास्त्री, वाराणसी

'भारतीय वाङ्मय' का अक्टूबर 2010 का अंक प्राप्त हुआ। शारदीय आलोक प्रभा प्रतीकात्मक आलेख राष्ट्रीय लक्ष्य की ओर संकेत करता है ताकि भारत आतंकवाद, गरीबी, बेरोजगारी आदि के तमस से निकलकर ज्योतिर्मय बन सके और विश्व पटल पर अपना यशस्वी कीर्तिमान स्थापित कर सके। ऐतिहासिक-सांस्कृतिक प्रतीक और प्रतिमान ही राष्ट्रोत्थान में सहायक सिद्ध हुए हैं—इतिहास इसका मुखर साक्षी है। अंतरंग संस्मरण में प्रसाद का स्मरण किया गया है, हिन्दी का बदला स्वरूप पाठकों को सान्त्वना प्रदान करता है। पुस्तकों की परिचयात्मक चर्चा, लोकार्पण, गोष्ठियों की चर्चा एवं स्थायी स्तम्भ पूर्व की भाँति पाठकीय स्पंदन में सहभागी बने हैं। आगामी संयुक्तांक और अधिक रोचक, विचारोत्तेजक एवं उपयोगी सामग्री प्रकाशित कर पाठकों को रसानुभूति कराने में अपनी सक्रिय भूमिका अदा करेगा—ऐसा विश्वास है।

—डॉ० पशुपतिनाथ उपाध्याय, अलीगढ़

आपके द्वारा एवं आपके प्रकाशन संस्थान द्वारा देश एवं हिन्दी की सेवा में जो प्रयास हो रहा है उसके लिये निश्चित ही आप अभिनन्दन के पात्र हैं। हिन्दी साहित्य की सेवा मे आपका यह कार्य अमर रहेगा इसका मुझे विश्वास है।

मुझे आपकी पत्रिका अत्यन्त प्रेरणादायी और विचारप्रवर्तक लगी। **—डॉ० राजू मिश्रा,** नागपुर

शेष पृ० 19 पर

आगामी प्रकाशन

वाक्योग : अध्यात्म तत्त्व-चिन्तन

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

सम्पादक

डॉ० अवधेश प्रसाद सिंह

आचार्य कल्याणमल लोढ़ा द्वारा रचित ग्रन्थ **'वाक्योग : अध्यात्म तत्त्व-चिन्तन'** में भारतीय अध्यात्म, जीवन दर्शन एवं संस्कृति के कई महनीय तत्त्वों पर बहुत ही गम्भीर एवं अन्वेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है। अशेष सारस्वत साधना के प्रतीक पुरुष आचार्य लोढ़ा ने इसके पूर्व भी भारतीय धर्म, दर्शन एवं अध्यात्म से सम्बन्धित अनेक विषयों पर कई ग्रन्थों की रचना की है, जिनमें भारतीय जनमानस को हमेशा से उद्‌बुद्ध करने वाले अनेक तत्त्वों पर गहन विचार-विमर्श किया गया है। अलग-अलग पुस्तकों में सोम तत्त्व, प्रणव तत्त्व, कर्म तत्त्व, पुनर्जन्म तत्त्व, मोक्ष तत्त्व, प्राण तत्त्व, भक्ति तत्त्व, श्रद्धा तत्त्व, काम तत्त्व, नीति तत्त्व आदि अनेक तत्त्वों पर विशद एवं विश्लेषणात्मक विचार उपलब्ध हैं, जो पाठकों को उन तत्त्वों पर और भी गम्भीर अध्ययन हेतु प्रेरित करते हैं।

भारतीय मनीषा के गम्भीर अध्येता होने के नाते आचार्य लोढ़ा ने भारतीय अध्यात्म, दर्शन, तत्त्व-चिन्तन, धर्म, संस्कृति आदि का जितना ही गहन मनन किया है उसे उतने ही रूपों में पुनर्प्रस्तुत करने का प्रयास भी किया है। उन्हें जब भी अवकाश मिला है उन्होंने उन विषयों पर प्रचुर मात्रा में लिखा है। वाक् का विशेष साधक होने के कारण वाक् के प्रति उनका आकर्षण सर्वाधिक रहा है। वाक् को अपनी साहित्यिक साधना की चरम विभूति के रूप में ग्रहण करते हुए उन्होंने भारतीय मनीषियों द्वारा की गई वाक् की अत्यन्त गूढ़, व्यापक और गम्भीर व्याख्याओं पर विशेष रूप से विवेचन करने की चेष्टा की है। उन्होंने अपनी अनेक कृतियों का नामकरण भी इसी वाक् को केन्द्र में रख कर किया है। **वाक्पथ, वाग्विभव, वाक्तत्त्व, वाक्सिद्धि, वाग्दोह, वाग्मिता** आदि इसके उदाहरण हैं। वस्तुत: वाक् के विभिन्न रूपों की विवेचना उनकी अन्यतम उपलब्धि है। वे मानते हैं कि ''वाक् ही सृष्टि का मूल मन्त्र है—ज्योति का रूप। सारा विश्व वाक् का ही स्वरूप है।'' इसके लिए वे वेदों, उपनिषदों, पुराणों आदि से असंख्य उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और कहते हैं कि जो वाक् की सामर्थ्य नहीं जानते वे नष्ट हो जाते हैं क्योंकि वाक् से ही परमार्थ को जाना जा सकता है एवं उससे आत्मरूप बना जा सकता है। ''वाक् मन में प्रतिष्ठित हो और मन वाक् में। यही मेरे भीतर प्रत्येक तत्त्व में आविर्भूत हो। वाक् और मनस-तत्त्व दोनों युग्म हैं और अभिन्न। वाक् की उपेक्षा से कोई भी राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकता। भारतीय संस्कृति का मेरुदंड वाक् सिद्धि है। वाक् से ही प्राणियों में जीवन, प्राणदर्शन, चित्त शक्ति प्राप्त होती है।''

'वाक्योग : अध्यात्म तत्त्व-चिन्तन' नामक इस ग्रन्थ में आचार्यवर ने मानवीय चिंतन को उत्कर्ष प्रदान करने वाले विभिन्न तत्त्वों—ब्रह्म तत्त्व, नाद तत्त्व, मन्त्र तत्त्व, धर्म तत्त्व, रहस्य तत्त्व, चेतना तत्त्व एवं काव्य तत्त्व के माध्यम से भारतीय आर्ष-चिंतन को अध्यात्म और दर्शन, रहस्यवाद, मानवतावाद एवं पाश्चात्य दर्शन के आलोक में विवेचित किया है और उनका गम्भीर अवगाहन-अन्वेषण करते हुए आधुनिक परिप्रेक्ष्य में उनकी महत्ता एवं उपयोगिता सिद्ध की है। क्योंकि आधुनिक विज्ञान भी आज अध्यात्म के निकट आने लगा है। राबर्ट ब्लीचफोर्ड, हेराल्ड शोलिंग, आइंस्टीन, जेम्स जीन जैसे अनेक वैज्ञानिकों ने विज्ञान को अध्यात्म से जोड़ कर देखने की चेष्टा की है।

आधुनिक हिन्दी गीतिकाव्य : समीक्षा/विवेचन

लेखक

डॉ० विश्वनाथ प्रसाद

गीत के विवेचन में एक दृष्टि यह हो सकती है कि केवल प्रवृत्ति का विवेचन दिया जाय। दूसरी दृष्टि यह हो सकती है कि गीतकारों को केन्द्र में रखकर गीत का अध्ययन किया जाय। मैंने देखा कि गीत की शैली को देखकर गीतकार को एक साथ रखा जा सकता है। किन्तु हर युग और प्रवृत्ति के गीतकार का अध्ययन करते समय हर गीतकार की विशेषता का अलग से विवेचन करना आवश्यक दिखाई देता है। छायावाद काल के जयशंकर प्रसाद, निराला और महादेवी तीनों के गीतों का अध्ययन करते समय परस्पर इतना अलगाव दिखाई देता है कि अपने कथ्य में तीनों एक-दूसरे से अलग है। उनकी शैली का हल्का सा तालमेल बैठाया जा सकता है। आगे के गीतकारों में हरिवंशराय बच्चन आदि एक परम्परा से बँधे हुए गीतकार हैं। लेकिन नवगीतकारों का कथन और शैली भिन्न है। इसीलिए मैंने छायावादी रचनाकारों के गीतों का एक खण्ड बनाया है। दूसरे अध्याय में छायावादोत्तर गीतकार हैं। तीसरे और चौथे अध्याय में नवगीतकारों की पुरानी और नयी पीढ़ी है। इन रचनाकारों की शैली में एकरूपता दिखाई देगी। किन्तु प्रत्येक गीतकार का कथ्य अलग है। उल्लेखनीय गीतकारों का अध्ययन करते समय उनके चिन्तन को मैंने उनके साथ ही विश्लेषित किया है। इस से मैं प्रत्येक गीतकार के गीत के सौन्दर्यात्मक स्वरूप और उनके चिन्तन का अलग-अलग ठीक से विवेचन कर पाया हूँ।

इस पुस्तक के लेखन में मैंने दो बातों पर विशेष ध्यान दिया है। एक यह कि गीत का मूल स्वरूप क्या है? युग कितना ही बदला हो, किन्तु गीत के स्वरूप पर ध्यान दिया जाय। गीत एक सीमा तक बदला है, लेकिन उसकी भावात्मकता किसी न किसी सीमा तक गीत के साथ बँधी हुई है। दूसरे गीत बहुत फैलाव वाला नहीं होता है। गीत एक बात को उठाता है और उसी को कह कर या उस पर अपने भाव को प्रसारित करके रुक जाता है। गीत का फैलाव अधिक नहीं होता है। कोई जरूरी नहीं है कि गीत वैयक्तिक अनुभूति को ही प्रगट करे। वह समाज, राष्ट्र आदि की बातों से भी जुड़ सकता है। आधुनिक काल के नवगीत में यह स्थिति दिखाई देती है।

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य : विविध सन्दर्भ

डॉ० रामचन्द्र तिवारी

प्रस्तुत संग्रह में मध्यकाल के विविध सन्दर्भों से सम्बद्ध निबन्ध संगृहीत हैं। मध्यकाल में भक्ति और रीति दोनों का समावेश हो जाता है। ये निबन्ध किसी न किसी संस्था की माँग पर लिखे गये हैं, इसलिए इनमें गहराई और वैविध्य दोनों है। इनका सबसे बड़ा महत्व यह है कि ये आज की दिशाहीन मानव-चेतना को स्वस्थ दिशा की ओर अग्रसर करने में समर्थ हैं। निश्चय ही मध्यकालीन हिन्दी काव्य-चेतना के प्रति जिज्ञासा का भाव रखने वाले साहित्यिकों और इस विषय के सामान्य पाठकों दोनों के लिए यह संग्रह उपयोगी होगा।

परलोक तत्त्व

लेखक

भार्गव शिवराम किंकर योगत्रयानन्द

अनुवादक : **एस०एन० खण्डेलवाल**

यह ग्रन्थ चार खण्डों में परिपूर्ण हुआ है। प्रस्तावना, आस्तिक तथा नास्तिक, परलोक क्या है? जीव-जन्म से सम्बन्धित शास्त्रोपदेश, इसी सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों का मत, यह है प्रथम खण्ड का विषय। द्वितीय तथा तृतीय खण्ड में जीव के जन्म-सम्बन्ध में मेरे मन्तव्य की अनुवृत्ति तथा पुनर्जन्म-सम्बन्धित विवेचना है। चतुर्थ खण्ड में पुनर्जन्म-सम्बन्धित मेरी अनुवृत्ति (मन्तव्य की अनुवृत्ति), कर्मतत्व का संक्षिप्त विवरण, लोकान्तर, मरणोत्तर जीव की गति तथा ब्रह्म, ईश्वर, जीव तथा लिंग देह का विवरण है। (खेद का विषय है कि यह चतुर्थ खण्ड बहुत खोजने पर भी प्राप्त नहीं हो सका, अत: इस प्रस्तुति में मात्र तीन खण्डों का ही समावेश हो सका है।

संगोष्ठी/लोकार्पण

मिथक एवं उनके वैज्ञानिक अध्ययन पर संगोष्ठी

विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 'मिथक एवं उनके वैज्ञानिक अध्ययन' विषयक संगोष्ठी का आयोजन हुआ। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में राज्यसभा सदस्य व प्राच्यविद् प्रो० कपिला वात्स्यायन ने कहा कि विचारों का समुच्चय मिथकीय अवधारणाओं को जन्म देता है। उन्होंने शिवलिंगों, शालीग्राम एवं जल और जलजीवन आदि प्रतीकों के जरिए मिथकीय अवधारणाओं को स्पष्ट किया।

'परम्परा और समकालीन आलोचना' विषयक व्याख्यान

विगत दिनों काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग व बच्चन सिंह न्यास के तत्त्वावधान में 'परम्परा और समकालीन आलोचना' विषयक व्यख्यान का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य वक्ता वरिष्ठ आलोचक प्रो० मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि प्रो० बच्चन सिंह सिद्धान्त व एकरूपता के कायल थे। वे साहित्य, राजनीति, दर्शन व व्यवहार काव्यशास्त्र से जुड़े नए-नए क्षितिजों के प्रति सतत जिज्ञासा भाव रखते थे। वे आलोचना के साथ-साथ रचना में भी प्रवीण थे। अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ कवि प्रो० केदारनाथ सिंह ने कहा कि बच्चन सिंह आधुनिक हिन्दी आलोचना के ऐसे दुर्लभ आलोचक थे जिनमें परम्परा और आधुनिकता के समन्वय का अद्‌भुत विवेक था। न्यास के अध्यक्ष प्रो० सुरेन्द्र प्रताप ने न्यास के उद्‌देश्यों की विस्तार से जानकारी दी। आयोजन में वरिष्ठ कथाकार प्रो० काशीनाथ सिंह, प्रो० राधेश्याम दुबे, प्रो० अवधेश प्रधान, प्रो० कुमार पंकज आदि उपस्थित थे।

भोजपुरी कच्चा धागा, तोड़ले न टूटी

वाराणसी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के उडप्पा सभागार में 20 नवम्बर की शाम लगभग डेढ़ घण्टे तक भोजपुरी साहित्य, संस्कृति, बोली भाषा पर विचारों का प्रवाह चला। मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष श्रीमती मीरा कुमार ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में भोजपुरी भवन एवं लोक संस्कृति संग्रहालय का शिलान्यास करने के बाद ठेठ भोजपुरी में कहा कि 'भोजपुरी कच्चा धागा हौ एकै तोड़ल ना जा सकेला'। भोजपुरी थाती है, इसे सहेज कर रखना है। भोजपुरी मन व आत्मा की भाषा है और यही ऐसी भाषा है जिसके शब्द कोष में 'मेरा' शब्द नहीं है, 'हमारा' का प्रयोग किया जाता है।

उन्होंने कहा कि भोजपुरी भाषा की समृद्धि लोकगीत, लोककला, साहित्य सम्पदा सब कुछ इसमें निहित है। इसमें आत्मीयता का रस भी समाहित है। इसे और समृद्ध करने की जरूरत है। यह भाषा आज अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप ले रही है। उन्होंने भोजपुरी के एक शब्द 'पियरी' को केन्द्र में रखा। कहा कि 'पियरी' केवल एक वस्त्र नहीं है बल्कि हमारी पहचान और 'हमार' भोजपुरी का दर्पण है। भोजपुरी को अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का आधार भी बनाना है। अपने धारा प्रवाह भोजपुरी व्याख्यान में श्रीमती कुमार ने भोजपुरी संस्कृति के उन गीतों का भी जिक्र किया कि जो आज भी पूरी ठसक से कायम हैं। जैसे सोहर, छठ मइया के गीत, परछन, हरदी, नहावन, मड़वा, रोपनी, कटनी, जांता, बिरहा का उल्लेख किया। फिर भोजपुरी से जुड़े पुरोधाओं जैसे भिखारी ठाकुर, चतुरी चाचा, लोहा सिंह, शारदा सिन्हा का भी नाम लिया। उन्होंने कहा कि अनेकों बोली भाषा की अपनी लिपि होती है, भोजपुरी की भी अपनी लिपि है। 'कैथी' लिपि कहीं लुप्त हो चुकी है इसे बचाइए। उन्होंने व्याख्यान के दौरान जयप्रकाश नारायण, राजेन्द्र प्रसाद, बाबू जगजीवन राम आदि का भी नाम लिया। अपने 45 मिनट के व्याख्यान में उन्होंने भोजपुरी में ही कहा कि 'बनारसी पान क आपन अन्दाज बा। बनारसी साड़ी के त पुछहीं के नाहीं।' कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो० डी०पी० सिंह ने कहा कि हिन्दी हमारी मातृभाषा है लेकिन भोजपुरी व ब्रज हमारी मौसी है। विषय प्रस्तावना भोजपुरी अध्ययन केन्द्र के समन्वयक प्रो० सदानन्द शाही ने रखी। संचालन डॉ० अवधेश प्रधान ने किया।

भोजपुरी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने का प्रयास : बाद में पत्रकारों से बातचीत में श्रीमती कुमार ने कहा कि भोजपुरी कार्यक्रमों में अवश्य जाती हूँ। इसे आठवीं अनुसूची में डालने के प्रयास हो रहे हैं।

'साखी' के 21 वें अंक का लोकार्पण

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के भोजपुरी अध्ययन केन्द्र में 'साखी' पत्रिका के 21वें अंक का लोकार्पण प्रो० रामकीर्ति शुक्ल ने किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने कहा कि यह अंक हिन्दी की उच्चस्तरीय पत्रिकाओं के समकक्ष रखा जाने वाला है। प्रो० बलराज पाण्डेय ने कहा कि यह पत्रिका विमर्श की है और इसमें छपना किसी के लिए भी गौरव की बात है।

कार्यक्रम का संचालन साखी के सम्पादक प्रो० सदानंद शाही ने और धन्यवाद ज्ञापन प्रो० महेन्द्रनाथ राय ने किया।

डॉ० कन्हैया सिंह की पुस्तकों का लोकार्पण

भारतीय साहित्य संगम, आजमगढ़ के तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी द्वारा प्रकाशित डॉ० कन्हैया सिंह की सम्पादित कृति 'पदुमावति' के साथ ही उनकी आलोचनात्मक पुस्तक 'मलिक मुहम्मद जायसी' तथा 'महाकवि रामचरित उपाध्याय' का लोकार्पण 23 नवम्बर 2010 को शिबली नेशनल कॉलेज के सभागार में महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के सहयोग से मुख्य अतिथि डॉ० श्रीपाल सिंह 'क्षेम' ने किया।

निधि हैं पाण्डुलिपियाँ

पाण्डुलिपियों के सम्पादन विज्ञान और पाठ-समीक्षा के अध्ययन की आज बहुत आवश्यकता है, क्योंकि यह भारतीय ज्ञान की निधि हैं। वाराणसी स्थित पार्श्वनाथ विद्यापीठ में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी व राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में 'पाठ-समीक्षा एवं पाण्डुलिपि सम्पादन' विषयक तीन सप्ताह की कार्यशाला का मंगलवार को उद्‌घाटन करते हुए गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व वीसी प्रो० बी०एम० शुक्ल ने उक्त विचार व्यक्त किए।

रवीन्द्र खरे 'अकेला' की किताबों का लोकार्पण

नागरिक कल्याण समिति भोपाल के तत्त्वावधान में विजया दशमी के शुभ अवसर पर महामहिम श्री रामेश्वर ठाकुर, राज्यपाल मध्य प्रदेश के कर कमलों द्वारा युनाइटेड बैंक ऑफ इण्डिया, एम०पी० नगर शाखा के शाखा प्रबन्धक श्री रवीन्द्र खरे 'अकेला' की विगत तीस वर्षों से आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारित कहानियों का संग्रह 'तुम्हारे लिये' एवं 'मेरा लघुकथाओं का पहला नाबाद शतक' का लोकार्पण किया गया।

प्रेमचंद जयन्ती आयोजन एवं 'आकंठ' के विशेषांक का विमोचन

जनता वाचनालय में मध्य प्रदेश प्रगतिशील लेखक संघ, पिपरिया द्वारा कथा सम्राट प्रेमचंद की 130वीं जयन्ती का आयोजन न०पा० परिषद पिपरिया की अध्यक्ष श्रीमती सरिता बलराम बैस की अध्यक्षता और डॉ० हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० वीरेन्द्र मोहन के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। 'प्रेमचंद का कथा साहित्य और समकालीन चुनौतियाँ' विषय पर अपने वक्तव्य में प्रो० वीरेन्द्र मोहन ने कहा, प्रेमचंद प्रबुद्ध समाज से अधिक उस समाज के हैं जो पढ़ा लिखा नहीं है और शोषित है। स्वाधीनता आन्दोलन, नवजागरण, सुधारवाद, नारी शिक्षा आदि प्रेमचंद के कथा साहित्य के विषय रहे हैं। इनके माध्यम से हम हिन्दी भाषा के स्वरूप को जान सकते हैं। इस अवसर पर 'आकंठ' के 110वें अंक का विमोचन भी हुआ जो मशहूर शायरा जया नर्गिस की ग़ज़लों पर केन्द्रित है।

हिन्दी दिवस समारोह आयोजित

मैसूर महाराणी महिला कला और वाणिज्य पदवी कालेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० अज़रा

बानू जी ने जे०एस०एस० महिला स्नातक (स्वायत्त) तथा स्नातकपूर्व कालेज में दिनांक 6 अक्टूबर 2010 को आयोजित किये गये हिन्दी दिवस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि—हिन्दी हमारी राजभाषा है, सम्पर्क भाषा है। राष्ट्र भाषा बनने में सक्षम भी है। राष्ट्र-भाषा के बिना राष्ट्र गूँगा है। हिन्दी सभी भारतीय भाषाओं की बहन है। यह भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत है। हिन्दी जोड़नेवाली सुई है, तोड़नेवाला हथौड़ा नहीं। वह भारतीय संस्कृति को एक छत्रछाया में लाती है।

पदवीपूर्व कालेज की विभागाध्यक्ष प्रो० बी०टी० शशिकला देवीजी ने प्रस्ताविक भाषण देते हुए कहा कि मनुष्यमात्र जो विचारजीवी है, उसे अपने विचारों का संवहन करने के लिए भाषा की जरूरत पड़ती है। हिन्दी मधुर, सुन्दर भाषा के रूप में भारत ही नहीं, विश्व की आबादी के अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में हिन्दी माह समापन समारोह का आयोजन

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून में माह-भर की हिन्दी सम्बन्धी गतिविधियों के समापन के अवसर पर आयोजित समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए नागपुर (महाराष्ट्र) से पधारे विद्वान प्रो० विष्णुकुमार गुर्टू ने हिन्दी की शक्ति के लिए उसमें नित-नवीनता की आवश्यकता पर बल दिया व कार्यालयीन हिन्दी तथा सरकार के निर्देशानुसार अपेक्षित अनिवार्य बिन्दुओं को अपने व्याख्यान का विषय बनाकर उपस्थित श्रोताओं का उत्साहवर्द्धन किया।

समारोह की अध्यक्षता प्रो० आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रख्यात समालोचक एवं साहित्यकार, सागर ने की। उन्होंने अर्थ केन्द्रित इस युग में हिन्दी की छाती पर अंग्रेजी को लादे जाने की बात कही और भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों को भूले जाने पर अपनी चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि हम अपनी लोक बोलियों को भी भुला रहे हैं, हम अपने से दूर हो रहे हैं। सूचना क्रान्ति के विस्फोट ने भाषा और पत्र लेखन की विधाओं को लगभग समापत कर दिया है। जिससे हमारी संवेदनाएँ भी समाप्त हो रही हैं। आज हमारे आन्दोलन जाति, राजनीति आदि के लिए हो रहे हैं। भाषा, संस्कार, पहचान को लेकर कोई आन्दोलन नहीं हो रहा है।

बीसवीं सदी का अर्थ और जन्मशती का सन्दर्भ पर संगोष्ठी

महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा में 2-3 अक्टूबर 2010 को अज्ञेय, नागार्जुन, शमशेर, केदारनाथ व फैज़ की जन्म शताब्दी श्रृंखला के अन्तर्गत 'बीसवीं सदी का अर्थ और जन्मशती का सन्दर्भ' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उद्घाटन समारोह में विश्वविद्यालय के कुलाधिपति व सुप्रसिद्ध आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने कहा कि हिन्दी कविता में प्रयोगवाद का श्रेय भले ही सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' को दिया जाता है लेकिन वास्तविकता यह है कि कविता में सबसे ज्यादा प्रयोग बाबा नागार्जुन ने किया था। उन्होंने नागार्जुन और केदारनाथ अग्रवाल को जमीन से जुड़ा हुआ कवि बताते हुए कहा कि उनकी कविताएँ ठेठ लोकजीवन की भाषा में संज्ञा, विशेषण से नहीं अपितु क्रियाओं से बोलती हैं। वे अपनी कविता में जनता की बोली-वाणी ही नहीं अपितु आम जनता के दु:ख-दर्दों को भी उकेरते हैं। समारोह में अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग की पूर्व अध्यक्ष प्रो० निर्मला जैन ने नामवर सिंह के दृष्टिकोण का खण्डन करते हुए कहा कि चारों कवियों को छोटा या बड़ा करके नहीं देखा जाना चाहिए। नामवर जी ने भले ही अज्ञेय को इस तरह से खारिज कर दिया लेकिन अज्ञेय का महत्त्व है। उन्होंने कहा कि हिन्दी साहित्य में केवल अज्ञेय ने भारत विभाजन पर शरणार्थी श्रृंखला से 11 कविताएँ लिखीं। उन्होंने शरणागत जैसी बड़ी मार्मिक कहानी भी लिखी लेकिन प्रगतिशीलता के दौर में तमाम लोगों ने अज्ञेय की आलोचना की।

स्वागत वक्तव्य में कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि इस वर्ष कवि गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर का डेढ़ सौवां जयन्ती वर्ष है। साथ ही नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर, अज्ञेय तथा उर्दू के शायर फैज़ अहमद फैज़ का जन्मशताब्दी वर्ष है। 20वीं शताब्दी बहुत उथल-पुथल वाली रही है तथा क्रान्तिकारी परिवर्तनों की भी साक्षी रही है, उन मुद्दों पर विचार-विमर्श करने तथा पूरी शताब्दी का आकलन करने के लिए महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा शताब्दी श्रृंखला का आयोजन किया जा रहा है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के संग्रहालय की वेबसाइट www.archive.hindivishwa.org का उद्घाटन सुरेन्द्र वर्मा के हाथों किया गया।

अज्ञेय के साहित्य पर विमर्श के लिए आयोजित सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार प्रो० गंगाप्रसाद विमल ने कहा कि आलोचना अज्ञेय से डरती है। 20वीं सदी के कई सवालों से अज्ञेय टकराते हैं पर कोई टिप्पणी नहीं करते बल्कि सवालों के बीच में जाते हैं। चेन्नई के शशिभूषण ने कहा कि अज्ञेय को पढ़ते हुए जब हम बात करते हैं तो उसे आलोचना की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि किसी भी कवि को पढ़ने के बाद अन्त में आलोचना से ही जूझना पड़ता है। इस सत्र में श्री बलराम तिवारी, डॉ० कृपाशंकर चौबे आदि ने विचार व्यक्त किये।

केदारनाथ अग्रवाल के साहित्य पर चिन्तन के लिए आयोजित सत्र के दौरान साहित्यकार प्रो० खगेन्द्र ठाकुर ने कहा केदारनाथ अग्रवाल एक अमीर घर में पैदा हुए थे परन्तु वे इतने संवेदनशील थे कि उन्होंने गरीब जनता के विषय पर बहुत कुछ लिखा। इस अवसर पर प्रो० अजय तिवारी ने कहा कि शमशेर बहादुर सिंह ने केदारनाथ पर सबसे अच्छी आलोचना की है। इस अवसर पर तद्भव के सम्पादक अखिलेश, नागपुर के वसंत त्रिपाठी, नरेन्द्र पुंडरीक आदि वक्ताओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

कवि नागार्जुन के साहित्य पर विमर्श के लिए आयोजित सत्र के दौरान प्रो० विजेन्द्र नारायण सिंह ने कहा कि नागार्जुन की कविता, जीवन के बारीक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध थी। इस सत्र में अवधेश मिश्र, गोपेश्वर सिंह, प्रो० शम्भुनाथ आदि ने विचार व्यक्त किये।

शमशेर पर एकाग्र सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्यकार अरुण कमल ने कहा कि शमशेर एक ऐसे कवि थे जो अपनी बात अपने तरीके से रखते थे तथा अपने तरीके से काम करते थे।

फैज़ अहमद फैज़ पर एकाग्र सत्र के दौरान अध्यक्षीय वक्तव्य में अली जावेद ने फैज़ को जनतान्त्रिक सोच रखने वाले शायर की उपाधि देकर उन्हें धर्मनिरपेक्ष कवि की संज्ञा से विभूषित किया। समापन अवसर पर कुलपति विभूतिनारायण राय ने देशभर से आए साहित्यकारों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस शताब्दी श्रृंखला की शुरुआत महात्मा गाँधी की कर्मभूमि से हुई है अब हम देशभर में इस श्रृंखला को जारी रखेंगे।

हिन्दी के चार बड़े कवियों पर डाक-टिकट जारी करने की अपील : जन्मशती श्रृंखला समारोह के दौरान उपस्थित साहित्याकरों ने नागार्जुन, अज्ञेय, केदारनाथ अग्रवाल, शमशेर पर डाक टिकट जारी करने की अपील केन्द्रीय संचार मन्त्री, भारत सरकार से की है।

हिन्दी सप्ताह के अन्तर्गत राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय कार्यक्रम

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय तथा राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित हिन्दी सप्ताह का उद्घाटन कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के पूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० ब्रह्मानन्द ने किया। उन्होंने 'वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी' विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि हिन्दी हिन्द देश की भाषा है, किसी जाति या प्रान्त की नहीं। अंग्रेजी विदेशों से सम्पर्क की भाषा तो हो सकती है किन्तु मातृभाषा तो हिन्दी ही रहेगी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ० बाबूराम, एसोसियट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हिन्दी एक उदार भाषा है

जिसने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को विश्व को बहुत पहले ही समझा दिया था। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में नार्वे से आए विद्वान डॉ० सुरेशचन्द्र शुक्ल ने 'यूरोपीय देशों में हिन्दी' विषय पर व्याख्यान दिया। इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे हिन्दी विभाग के प्रभारी डॉ० नवीन नन्दवाना ने बताया कि हिन्दी भारत के आम-जन की भाषा है और यह गाँव से नगरों को जोड़ने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

अमृत-सम्मान एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी

धन्यता ही जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। मैं हिन्दी की सेवा के माध्यम से देश को एक सूत्र में बाँधने की कोशिश कर रहा हूँ और यह कार्य राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित इस संस्था 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा' के माध्यम से सेवा करने का अवसर मुझे मिला यह मेरे लिए गर्व की बात है। अमृत महोत्सव आयोजन के पीछे ज्वलंत प्रश्नों के विषयों पर विचार-विमर्श हो। आज जो विमर्श था—'हिन्दी : दशा और दिशा' पर समृद्ध चर्चा हुई है। हिन्दी की दिशा में सकारात्मक कदम उठाना है। आज जिस विषय पर मंथन हुआ है निश्चित ही मुझे अमृत कण मिले हैं। इस आशय के विचार वरिष्ठ साहित्यकार श्री कैलाशचन्द्र पन्त ने अपने सम्मान के उत्तर में व्यक्त किए।

श्री कैलाशचन्द्र पन्त का स्मृतिचिह्न, सम्मान पत्र, शाल-श्रीफल, पुष्पगुच्छ एवं 'सम्मान की राशि' देकर न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी जी ने राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की ओर से सम्मान किया। श्रीमती किरण पन्त का सम्मान सूतमाला, सम्मान पत्र, शाल-श्रीफल देकर प्रो० अनन्तराम त्रिपाठी जी ने किया।

सम्मान समारोह से पूर्व 'हिन्दी की दशा और दिशा' विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ। अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी ने अपने उद्‌बोधन में विचार रखते हुए कहा—''जिस दिन देश आजाद हुआ उसी दिन गाँधीजी ने कहा था कि दुनिया से कह दो कि गाँधी अंग्रेजी भूल गया। वह गाँधीजी का स्वभाषा प्रेम था। स्वभाषा का प्रेम अलग चीज होती है। इसी बात पर अमल करते हुए मैंने भी हिन्दी बोलने पर ही अपना ध्यान केन्द्रीत किया। हिन्दी का प्रसार करना ही मेरा एकमात्र उद्‌देश्य है। साहित्यकार महादेवी वर्मा ने कहा था कि जिस राष्ट्र की राष्ट्रभाषा नहीं होती वह राष्ट्र गूँगा होता है। भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी होते हुए भी हिन्दी की अवहेलना की जा रही हैं। हिन्दी की प्रतिष्ठा बढ़ानी है तो कम से कम अपने घरों में हिन्दी का प्रयोग करना चाहिए। पढ़ाई की भाषा हिन्दी ही होनी चाहिए। देश में ज्यादातर लोग हिन्दी में ही बोलते हैं। उनकी व्यवहार की भाषा हिन्दी ही है। सरकारी कार्यालयों में प्रारूप अंग्रेजी में बनते हैं इसका अनुवाद हिन्दी में होता है। अनुवाद की भाषा कभी सशक्त नहीं बन सकती। भाषा की गुलामी बदलनी हो तो सामान्य लोगों की भाषा अपनानी होगी। दुनिया में एक ही ऐसा देश है जिसमें कोर्ट में राजनारायण, मधु लिमये को हिन्दी में बयान देने से मना कर दिया गया, क्योंकि न्यायाधीश हिन्दी नहीं जानते थे।''

नागार्जुन का जन्म शताब्दी समारोह

देहरादून स्थित एम०के०पी० (पी०जी०) कालेज की हिन्दी परिषद् के तत्त्वावधान में जन कवि नागार्जुन के जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में समारोह का आयोजन किया गया।

लेखिका और हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० विद्या सिंह के संयोजन में सम्पन्न इस समारोह को सम्बोधित करते हुए सुपरिचित कवि श्री लीलाधर जगूड़ी ने नागार्जुन से अपनी प्रथम भेंट के बारे में बताया। श्री जगूड़ी ने कहा कि शास्त्र में मूल्यांकन की पद्धति दरवाजा बन्द करने की है। उन्होंने कहा कि तुलसी और कबीर आज भी प्रासंगिक बने रहे, यह गौरव की बात नहीं है, यह उन दोनों का सौभाग्य है। जब तक हमारा समाज सड़ा-गला बना रहेगा तब तक ये दोनों कवि भी प्रासंगिक बने रहेंगे। उन्होंने कहा कि किसी भी रचनाकार का मूल्यांकन 700 वर्ष बाद भी हो सकता है। नागार्जुन का मूल्यांकन हम दरवाजे बन्द करके नहीं कर सकते। नागार्जुन जनता के कवि हैं, परन्तु नागार्जुन का अपना कोई विचार नहीं है। उनकी कविता में मानवीयता है।

समारोह के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध कथाकार श्री विद्यासागर नौटियाल ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि साहित्यकार कभी मरा नहीं करता है। मैंने नागार्जुन को बाबा बनते देखा। उन्होंने कहा कि 'नागार्जुन' पर्यावरण पर लिखने वाले हिन्दी में पहले रचनाकार थे।

यू०के० कवि सम्मेलन यात्रा 2010

यू०के० में 10 हिन्दी कवि सम्मेलनों का आयोजन भारतीय संस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के सहयोग से लन्दन स्थित भारतीय उच्चायोग की देख-रेख में हुआ, जिसमें भारतीय उच्चायोग के हिन्दी-संस्कृति अधिकारी श्री आनन्द कुमार एवं यू०के० हिन्दी समिति के श्री के०बी०एल० सक्सेना का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। 10 स्थानों बेलफास्ट, कार्डिफ, स्लाव, लीवरपूल, लन्दन, यॉर्क, बर्मिंघम, बोल्टन, वॉल्वोरेंपटन, लेस्टर में कवि सम्मेलन हुए। नेहरू केन्द्र में लन्दन की निदेशक श्रीमती मोनिका कपिल मोहता तथा डॉ० मधुप मोहता के मार्गदर्शन में कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। सर्वश्री केशरीनाथ त्रिपाठी, रामेन्द्र मोहन त्रिपाठी, महेन्द्र अजनबी, शशि तिवारी, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, गजेन्द्र सोलंकी तथा स्थानीय कवियों ने कविता पाठ किया।

संगोष्ठी सम्पन्न

कथाकार श्री प्रियंवद के संयोजन एवं लब्धप्रतिष्ठ उपन्यासकार श्री गिरिराज किशोर के निर्देशन में अखिल भारतीय 16वाँ समागम, कुशीनगर (देवरिया) में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्‌घाटन श्री गिरिराज किशोर द्वारा किया गया। 'विकास का वर्तमान और अन्तिम आदमी' विषय पर सामाजिक कार्यकर्ता सुश्री मेधा पाटकर ने अपने विचार व्यक्त किए।

'संत कवि कनकदास' कृति लोकार्पित

साहित्य अकादेमी तथा कर्नाटक संघ द्वारा दिल्ली में पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह 'शशि' द्वारा लिखित 'संत-कवि' कनकदास पुस्तक का लोकार्पण केन्द्रीय मन्त्री व कन्नड़ साहित्यकार डॉ० वीरप्पा मोइली ने किया।

हिन्दी को बाजारू बनाने से बचें

छपाई की भाषा में मिलावट से बचने की हिदायत देते हुए हिन्दी के वरिष्ठ आलोचक नामवर सिंह ने हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित एक गोष्ठी में कहा कि हिन्दी को बाजार की भाषा बनाना तो ठीक है, लेकिन इसे बाजारू बनाने से बचना चाहिए।

उन्होंने कहा कि हिन्दी में टेलीविजन के आने के साथ ही मिलावट आनी शुरू हो गई। टीवी से खिचड़ी भाषा सामने आई और दिमागी आलस्य के कारण प्रिण्ट मीडिया ने भी उसे अपना लिया। वरिष्ठ पत्रकार राजदीप सरदेसाई ने कहा कि अंग्रेजी मीडिया के पत्रकारों के बराबर वेतन पाने के बावजूद हिन्दी के पत्रकारों में आत्मविश्वास की कमी है और वे खबरों को सनसनीखेज ढंग से परोसते हैं।

प्रो० पुरुषोत्तम अग्रवाल ने इसी विषय पर बोलते हुए कहा कि हिन्दी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के साथ दिक्कत यह है कि इसमें सृजनात्मक अभिव्यक्ति का तो विकास हो रहा है, लेकिन ज्ञान का साहित्य विकसित नहीं हो पा रहा है। सभा का संचालन कर रहे कवि अशोक चक्रधर ने कहा कि हिन्दी दिल की भाषा है तो अंग्रेजी दिमाग की। स्पैनिश विद्वान् डॉ० ऑस्कर पुजोल ने हिन्दी की प्रतिष्ठा में कमी पर अपने विचार रखे।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर की याद में राष्ट्रीय महोत्सव कराएगा केन्द्र

केन्द्र सरकार ने कविगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर की याद में राष्ट्रीय महोत्सव आयोजित करने की घोषणा की है। ठाकुर के 150वें जन्मदिवस पर केन्द्र सरकार ने उनकी जीवनी, कविताओं, कहानियों और विचारों का प्रचार करने वाले आयोजनों पर आर्थिक अनुदान देने को मंजूरी दे दी है। केन्द्र सरकार ने अनुदान देने के लिए प्रधानमन्त्री और वित्त मन्त्रालय की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय समिति का गठन किया है। यह समिति कविगुरु जन्मदिवस

को राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महोत्सव के रूप में मनाने के लिए मदद करेगी।

'बेबर्ग शाख' का लोकार्पण

नई दिल्ली के सचिवालय सभागार में उर्दू शायर श्री निर्मल सिंह रायपुरी की नज्मों और ग़ज़लों के संकलन 'बेबर्ग साख' के हिन्दी संस्करण का लोकार्पण दिल्ली की मुख्यमन्त्री श्रीमती शीला दीक्षित ने किया। श्री गोपीचंद नारंग ने समारोह की अध्यक्षता की।

अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य संवाद

मध्यप्रदेश की साहित्य अकादमी एवं मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के संयुक्त तत्त्वावधान में भोपाल में अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य संवाद का आयोजन किया गया। भारत भवन के सभा भवन में सम्पन्न इस आयोजन का उद्घाटन प्रदेश के संस्कृति मन्त्री श्री लक्ष्मीकान्त शर्मा ने किया। आयोजन में 14 प्रान्तों के 10 भाषाओं के 35 साहित्यकारों ने सहभागिता की। इसके अतिरिक्त विदेश से आमन्त्रित साहित्यकारों में बांग्लादेश के श्री शफी अहमद, नेपाल के श्री अभी सुवेदी, तिब्बत विश्वविद्यालय के कुलपति श्री नवांग समतेन भी उपस्थित थे।

संवाद के विचारणीय विषय को पाँच सत्रों में विभक्त किया गया था—1. साहित्य और सनातन तत्त्व, 2. वर्तमान साहित्य का भविष्य, 3. भविष्य का साहित्य, 4. साहित्य में भाषानुशासन और 5. साहित्य में बाजारवाद।

अनुवाद के बिना चल नहीं सकता विश्व समाज

हैदराबाद कादम्बिनी क्लब, हैदराबाद का वार्षिकोत्सव आर०जी०ए० के सभागार में मनाया गया, इस दौरान जी० परमेश्वर द्वारा किये गये 56 तेलुगु कविताओं के हिन्दी अनुवाद 'तेलुगु काव्यप्रभा' का लोकार्पण भी किया गया।

धर्मशाला में दो दिवसीय 'जनजातीय लोक साहित्य विविध आयाम' गोष्ठी व कवि सम्मेलन सम्पन्न

धर्मशाला, अखिल भारतीय साहित्य परिषद की 'जनजातीय लोक साहित्य : विविध आयाम विषय पर आयोजित दो दिवसीय गोष्ठी स्कूल शिक्षा बोर्ड के सभागार में सम्पन्न हुई।

गोष्ठी में प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड के सचिव व साहित्यकार प्रभात शर्मा ने पंगवाला समाज उनकी बोली व विवाह परम्परा के बारे में विस्तार से बताया। डॉ० सुशील फुल्ल ने किन्नर लोककथाओं के बारे में कहा कि किन्नौर में 305 लोककथाएँ हैं। धार्मिक कथाएँ, पौराणिक, पशु-पक्षियों व राक्षस-राक्षसियों की कथाएँ शामिल हैं। वहीं, डॉ० शम्मी शर्मा ने जनजातीय जीवन लोक परम्पराएँ, साहित्य व संस्कार की चर्चा करते हुए भारत में रहने वाली विभिन्न जातियों की परम्पराएँ व रीति-रिवाज आदि पर प्रकाश डाला।

छरिंग दोरजे ने स्पीती जनजातीय समुदाय की प्राचीन, धार्मिक तथा सामाजिक व्यवस्था के बारे में बताया कि स्पीति की सीमा से ही तिब्बतियन व चीनी सभ्यता आरम्भ होती है। डॉ० गौतम व्यथित ने जनजातीय क्षेत्र भरमौर जनपद में एंचली गायन परम्परा के बारे में बताया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में सुदर्शन वशिष्ठ ने कहा कि लोक साहित्य पर अधिकांश कार्य अंग्रेज विद्वानों ने किया है, उनके बाद कार्य बहुत कम हुआ है। लोक साहित्य पर अभी भी बहुत कार्य करने की आवश्यकता है।

हिन्दी बनेगी बोलचाल की भाषा

भाषा को विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम बताते हुए मानव संसाधन विकास मन्त्री कपिल सिब्बल ने कहा कि उनके मन्त्रालय ने पत्राचार माध्यम से हिन्दी का सर्टिफिकेट कोर्स तैयार किया है, जो ऑनलाइन माध्यम से भी उपलब्ध होगा। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के स्वर्ण जयन्ती समारोह को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा, ''आज 93 देशों के 135 विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जा रही है। लेकिन भाषा तभी सफल होती है जब उसका प्रयोग बोलचाल में किया जाए।'' सिब्बल ने कहा कि सूचना प्रौद्योगिक के क्षेत्र में शोध एवं विकास को बढ़ावा देने वाली संस्था सी-डेक के सहयोग से केन्द्रीय हिन्दी महानिदेशालय ने नि:शुल्क सर्टिफिकेट पत्राचार पाठ्यक्रम पेश किया है जो एक अनूठी पहल है। इससे देश-विदेश में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में काफी मदद मिलेगी।

साहित्य जगत की अनमोल धरोहर थे डॉ० विश्वनाथ प्रसाद

काशी के प्रतिष्ठित साहित्यकार, ललित निबन्धकार, कवि, कथाकार एवं समीक्षक डॉ० विश्वनाथ प्रसाद काशी के साहित्य जगत की अनमोल धरोहर थे। वे नये रचनाकारों के प्रेरणास्रोत थे। ये बातें डॉ० प्रसाद की प्रथम पुण्य तिथि पर गत 1 अक्टूबर 2010 को कीर्ति बोध संस्थान की ओर से भोजूबीर स्थित उनके आवास पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं से कही।

जे०एन०यू० में पहला सुब्रह्मण्य भारती स्मृति व्याख्यान आयोजित

दिल्ली, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केन्द्र की ओर से विगत 19 अक्टूबर, 2010 को पहले सुब्रह्मण्य भारती स्मृति व्याख्यान का आयोजन किया गया। तमिल के मशहूर विद्वान् प्रोफेसर के चेलप्पन, डॉ० एच० बालसुब्रह्मण्यम और वरिष्ठ हिन्दी आलोचक मैनेजर पाण्डेय ने अपनी बात रखी। प्रो० चेलप्पन ने राष्ट्रकवि सुब्रह्मण्य भारती की महर्षि अरविन्द, रवीन्द्रनाथ टैगोर, कीट्स, शैली, माइकोवस्की आदि से तुलना की और बताया कि भारती की कविता हिन्दुस्तानियों का सामूहिक स्वप्न है। आलोचक मैनेजर पाण्डेय ने कहा कि भारती अपने कर्म और व्यवहार से भारतीय थे। उन्होंने तमिल कविता में आधुनिकता की शुरुआत की।

इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय द्वारा दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

खैरागढ़, विगत दिनों स्व० हबीब तनवीर एवं स्व० ब०व० कारंत के बहाने 'भारतीय रंगमंच में लोकशास्त्र और आधुनिकता की अवधारणा' विषय पर केन्द्रित राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़ द्वारा राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से किया गया। उद्घाटन सत्र में संगोष्ठी के मुख्य अतिथि ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध कवि एवं आलोचक अशोक वाजपेयी ने कहा कि आधुनिकता की परम्परा भारतीय रंगमंच में पूर्व से ही रही है। रंगमंच शिल्प की आवश्यकता महसूस करता है। हबीब जी ने अपने नाटकों को छत्तीसगढ़ी में करके उनमें आधुनिकता की सम्भावनाओं की भी तलाश की।

कंचना स्मृति व्याख्यानमाला एवं पुरस्कार समारोह 2010

नई दिल्ली, वरिष्ठ पत्रकार एवं भारतीय प्रेस परिषद की समिति के सदस्य श्री परंजॉय गुहा ठकुरता ने पत्रकारिता की शुचिता पर जोर देते हुए पत्रकारों का आह्वान किया कि वे इस भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग छेड़ें। सातवीं कंचना स्मृति व्याख्यानमाला में 'खबरों की खरीद फरोख्त, पत्रकारिता एवं लोकतन्त्र' विषय पर मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए उन्होंने यह बात कही। समारोह में इस वर्ष का कंचना स्मृति पुरस्कार सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ता स्वर्गीय श्री मार्कण्डेय सिंह को मरणोपरान्त दिया गया। यह पुरस्कार उनके करीबी सहयोगी व काशी हिन्दू विश्वविद्यालय छात्रसंघ के पूर्व अध्यक्ष प्रो० आनन्द कुमार ने प्राप्त किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विख्यात पत्रकार एवं नई दुनिया के राष्ट्रीय सम्पादक मधुसूदन आनन्द ने हिन्दी पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उल्लेख करते हुए कहा कि आजादी के बाद भी पत्रकारिता में मूल्य दिखाई देते थे। आज खबर तथा विज्ञापन के बीच की रेखा धुँधली हो गई है और भ्रष्टाचार को संस्थागत स्वरूप मिल गया है। उन्होंने इस बात पर भी गहरी चिन्ता जताई कि उपभोक्ता समाज में टेलीविजन शिक्षित करने की बजाय महज मनोरंजन प्रधान भूमिका में आ गया है। उन्होंने कहा कि इसके खिलाफ सभी को एकजुट होकर लड़ने की जरूरत है।

'मोहन चोपड़ा ग्रन्थावली' का लोकार्पण

नई दिल्ली, मोहन राकेश एवं कमलेश्वर के समकालीन हिन्दी जगत् के यशस्वी रचनाकार स्व० मोहन चोपड़ा की रचनाओं के संकलन की सात खण्डों में प्रकाशित एवं श्री सुनील चोपड़ा द्वारा सम्पादित ग्रन्थावली का लोकार्पण विगत 22 सितम्बर को हिन्दी भवन में वरिष्ठ साहित्यकार श्री गोविन्द मिश्र की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

'खँगाल', एक अभूतपूर्व आयोजन

'खँगाल' नाम दिया गया एक अभूतपूर्व आयोजन को जिसमें कला-ग्रन्थ के कुछ अंशों का पाठ और उस पर विमर्श हुआ। भोपाल स्थित हिन्दी भवन परिसर में केन्द्रीय ललित कला अकादमी नई दिल्ली के स्वर्ण जयन्ती ग्रन्थ 'हिस्टॉरिकल डेवलपमेंट ऑफ कंटेम्पररी इण्डियन आर्ट' के 'निसर्गवाद' और 'नवजागरणवाद' केन्द्रित हाल की अंग्रेजी में प्रकाशित प्रथम खण्ड में से प्रस्तुति की गई।

पहली बार गम्भीरता, समग्रता, व्यापक शोध और कला इतिहास लेखन के नए मानकों से समकालीन मध्य प्रदेश के कला इतिहास को खँगाला गया है। यह आश्चर्यजनक है कि विगत 60 वर्षों में पहली बार मध्य प्रदेश की कला या कलाकार के बारे में ललित कला अकादमी से कोई ग्रन्थ छपा।

ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी गौरव के पहले मुद्रित संस्करण का लोकार्पण

सिडनी, 2 अक्टूबर को गाँधी जयन्ती एवं लाल बहादुर शास्त्री के जन्मदिवस के अवसर पर सिडनी में हिन्दी के क्षेत्र में एक नया अध्याय जुड़ गया। हिन्दी गौरव ऑनलाइन समाचार-पत्र की सफलता के पश्चात् सिडनी गुजरात भवन, सिडनी में करीब 250 लोगों की उपस्थिति में हिन्दी गौरव के प्रथम प्रिण्ट संस्करण का विमोचन भारत के कौंसलर जनरल सिडनी माननीय अमित दास गुप्ता के कर-कमलों से हुआ। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथियों में मेरामेटा से सांसद माननीया तान्या गेडियल, डिप्टी स्पीकर एवं सांसद फिलिप रुड़क, सांसद लौरी फर्गुसन आदि थे।

'अज्ञेय का हिन्दी साहित्य को अवदान' विषय पर संगोष्ठी

18 नवम्बर को उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान तथा भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में आजाद भवन, नई दिल्ली में अज्ञेय जन्मशती के अवसर पर 'अज्ञेय का हिन्दी साहित्य को अवदान' विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई।

मुख्य वक्ता वरिष्ठ समालोचक डॉ० कृष्णदत्त पालीवाल थे। 'जनसत्ता' के सम्पादक श्री ओम थानवी ने अज्ञेय से सम्बन्धित अनेक रोचक संस्मरण सुनाए। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए 'साहित्य अमृत' के सम्पादक तथा कर्नाटक के पूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने अज्ञेय के जीवन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला।

अलंकरण समारोह सम्पन्न

14 अक्टूबर को भोपाल में म०प्र० राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के वार्षिक हिन्दी-सेवी अलंकरण समारोह में तेलुगु, कन्नड़, पंजाबी, मराठी, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं के हिन्दी-सेवियों, अहिन्दी-भाषी हिन्दी साहित्यकारों, समाज-सेवियों, मेधावी छात्राओं और सर्वश्रेष्ठ पाठक तथा आदर्श शिक्षक को राज्यपाल श्री रामेश्वर ठाकुर ने वर्ष 2010 के सम्मान एवं पुरस्कारों से सम्मानित किया।

अखिल भारतीय लघुकथा सम्मेलन एवं सम्मान समारोह का आयोजन

नई दिल्ली से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्रिका 'हम सब साथ साथ' द्वारा देश-भर से चयनित दो दर्जन से अधिक युवा एवं 80 वर्ष से भी अधिक आयु तक के लघुकथाकारों को एक ही मंच पर इकट्ठा कर उनकी श्रेष्ठ लघुकथाओं का पाठ व उनको सम्मानित किए जाने का एक अनूठा कार्यक्रम विगत 25 अक्टूबर को आयोजित किया गया। प्रख्यात साहित्यकार श्रीमती चित्रा मुद्गल के मुख्य आतिथ्य, कैपिटल रिपोर्टर के सम्पादक श्री सुरजीत सिंह जोबन की अध्यक्षता एवं लब्धप्रतिष्ठ कथाकार श्री बलराम के विशिष्ट आतिथ्य में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर श्रीमती चित्रा मुद्गल ने पत्रिका के इस कदम की सराहना करते हुए लघुकथा के विकास पर संतोष व्यक्त किया और कहा कि इसकी दशा व दिशा दोनों ही ठीक है। अब भावी पीढ़ी का दायित्व है कि वे इसे कहाँ तक ले जाते हैं।

18वाँ अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन सम्पन्न

22-23 अक्टूबर को गाजियाबाद में आदिकवि महर्षि वाल्मीकि जयन्ती पर दो दिवसीय '18वाँ अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन' मुख्यत: 'राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी का स्वाभिमान' विषय पर केन्द्रित रहा, जिसमें 'महर्षि वाल्मीकि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' पर चर्चा के साथ ही 'युवा पीढ़ी के विकास में सहायक है हिन्दी' तथा 'हिन्दी-उर्दू : साझा संस्कृति' विषयक विचार गोष्ठियों में जाने-माने विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किए।

मैथिलीशरण गुप्त की प्रतिमा का अनावरण

10 अक्टूबर को छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की आदमकद प्रतिमा का अनावरण-लोकार्पण छत्तीसगढ़ के शिक्षा व संस्कृति मंत्री श्री ब्रजमोहन अग्रवाल द्वारा किया गया।

श्रीमती क्रान्ति त्रिवेदी पर डाक टिकट जारी

29 अक्टूबर को दिल्ली की मुख्यमंत्री माननीया श्रीमती शीला दीक्षित ने प्रसिद्ध लेखिका स्व० श्रीमती क्रान्ति त्रिवेदी की स्मृति में डाक टिकट जारी किया। इस अवसर पर उन्होंने श्रीमती क्रान्ति त्रिवेदी के प्रभात प्रकाशन से प्रकाशित उपन्यास 'लता और वृक्ष' तथा बँगला में अनूदित कृति 'राधिका' का विमोचन भी किया।

राष्ट्रीय नारी साहित्यकार सम्मेलन सम्पन्न

23 अक्टूबर को अखिल भारतीय साहित्य परिषद मध्य प्रदेश का दो दिवसीय सम्मेलन आयोजित हुआ जिसका उद्घाटन म०प्र० के राज्यपाल श्री रामेश्वर ठाकुरने किया। म०प्र० के संस्कृति, उच्च शिक्षा एवं जनसम्पर्क मंत्री श्री लक्ष्मीकांत शर्मा, प्रसिद्ध कथाकार श्रीमती मृदुला सिन्हा, साहित्यकार श्री श्रीधर पराड़कर, कवयित्री डॉ० विनय षडंगी राजाराम, श्री सूर्यकृष्ण व प्रो० बृजकिशोर कुठियाला उद्घाटन अवसर पर मंच पर उपस्थित थे। परिषद् न्यास की त्रैमासिक पत्रिका 'साहित्य परिक्रमा' के नारी विशेषांक का लोकार्पण भी किया गया। 'बदलते जीवन-मूल्य और नारी लेखन', 'भारतीय प्रादेशिक भाषाओं में नारी-लेखन की सकारात्मक अभिव्यक्ति', 'प्रादेशिक भाषाओं में नारी लेखन : एक आकलन', 'नारी साहित्यकारों का सामाजिक उत्तरदायित्व : स्त्री-अस्मिता की नई चुनौतियाँ' आदि विषयों पर सत्र सम्पन्न हुए। सर्वश्री मालती जोशी, चंद्रकांता, नीरजा माधव, मेहरुन्निसा परवेज आदि देश भर से अनेक ख्यातनाम लेखिकाएँ सम्मेलन में सम्मिलित हुईं।

बीजिंग में लेखकों का शिष्टमंडल

विगत दिनों भारत से लेखकों का एक शिष्टमण्डल चीन गया। बीजिंग में बीजिंग इण्टरनेशनल बुक फेयर के उपलक्ष्य में इस वर्ष 2010 में भारत 'गेस्ट ऑफ ऑनर' था। यह पुस्तक मेला 30 अगस्त से 3 सितम्बर 2010 तक चला। साहित्य अकादेमी दिल्ली के सौजन्य से भारतीय भाषाओं के 20 लेखक इस आयोजन में सम्मिलित हुए। हिन्दी साहित्य से सर्वश्री मृदुला बिहारी, हिमांशु जोशी एवं विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भागीदारी की। इन लेखकों ने वहाँ राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए।

इंटरनेट पत्रिका 'गीत पहल' का लोकार्पण

24 अक्टूबर को काँठ रोड मुरादाबाद स्थित शिव मन्दिर सभागार में साहित्यिक इंटरनेट पत्रिका 'गीत पहल' का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। अध्यक्षता सुप्रसिद्ध नवगीतकार श्री माहेश्वर तिवारी ने की, मुख्य अतिथि गीतकार डॉ० बुद्धिनाथ मिश्र थे।

शेष पृष्ठ 19 पर

पुस्तक परिचय

भारत के पूर्व-कालिक सिक्के

डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त

पृष्ठ : 408 पृ० +
12 पृ० चित्र (सिक्के)

सजि. : रु० 275.00 ISBN : 81-7124-148-4
अजि. : रु० 170.00 ISBN : 81-7124-482-3
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारत के पूर्व-कालिक इतिहास-निरूपण के निमित्त सिक्कों का सर्वाधिक महत्व है। इन सिक्कों पर अंकित आलेखों के माध्यम से अज्ञात तथ्य प्रकाश में आये और संदिग्ध समझे जाने वाले तथ्यों की पुष्टि भी हुई। इस प्रकार सिक्कों के माध्यम से प्राप्त जानकारी से इतिहास का प्रामाणिक स्वरूप प्रकाश में आया।

इतिहास-निरूपण की दृष्टि से उपलब्ध साधनों और साक्ष्यों के रूप में जो भी प्राचीन-कालीन अवशेष आज उपलब्ध हैं उनमें सिक्कों का विशिष्ट मूल्य और महत्व है। उसी की चर्चा यहाँ अभीष्ट है। इस प्रसंग में कहना न होगा कि सिक्कों का उद्‌भव दैनिक आवश्यकताओं की आपूर्ति के निमित्त, लेन-देन, क्रय-विक्रय में विनिमय के सरल और सुविधाजनक उपकरण के रूप में हुआ था। उनका आविष्कार जब भी हुआ हो और जिन लोगों ने भी किया हो, वे उनके रूप में अनचाहे, अनजाने ऐसा उपकरण प्रस्तुत कर गये, जिसने अपने समय में अपने उद्देश्य की पूर्ति तो की ही, साथ ही उनमें वे अपने जीवन, संस्कृति और अपने कार्य-कलाप की अमिट छाप भी छोड़ गये। आज वे अपने काल के साक्ष्य बनकर हमारे लिए इतिहास-निरूपण में ताने-बाने का काम करते हैं।

भारत में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के मुद्राशास्त्री (numismatist) डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त ने इस ग्रन्थ में पूर्वकालीन (आरम्भ से 12वीं शती ई०) सिक्कों का समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है।

सिक्कों के माध्यम से तत्कालीन इतिहास की जानकारी किस प्रकार होती है, इसका विस्तृत विवेचन पुस्तक में किया गया है। इतिहास तथा पूर्व-कालिक सिक्कों के अध्येताओं के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

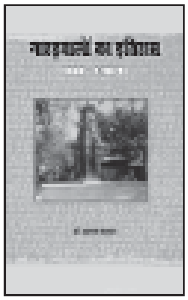

गाहड़वालों का इतिहास (1089-1196 ई०)

डॉ० प्रशान्त कश्यप

पृष्ठ : 208

सजि. : रु० 220.00

ISBN : 81-7124-504-8
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

गाहड़वाल राजवंश ने वर्तमान उ०प्र० के सम्पूर्ण भू-भाग पर लगभग सौ वर्षों तक शासन किया। इनके साम्राज्य में वर्तमान मध्य प्रदेश एवं बिहार का भी कुछ भाग सम्मिलित था। इन्होंने उत्तर भारत की एकमात्र ऐसी सत्ता के रूप में शासन किया जिसने पश्चिम से होने वाले मुस्लिम आक्रमण का प्रतिरोध सौ वर्षों तक किया। गाहड़वाल यद्यपि वैष्णव धर्मानुयायी थे, जैसा कि इनके अभिलेखों से स्पष्ट है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इनके राज्यकाल में सभी धर्मों के प्रति उदारता की नीति अपनायी गयी। उदाहरणस्वरूप हम कह सकते हैं कि इस काल में बौद्ध धर्म यद्यपि अवनति की ओर अग्रसर था किन्तु दूसरी ओर अभिलेखों से इस बात की पुष्टि होती है कि गाहड़वाल राजा गोविन्दचंद्रदेव की रानी कुमारदेवी ने सारनाथ, वाराणसी में बौद्ध भिक्षुओं को बिहार दान किया। साथ ही साथ उसने 'धर्मराजिका स्तूप' को पुनः शिलाकञ्चुकों से आच्छादित किया, जिसकी नींव मौर्य सम्राट अशोक ने डाली थी। काशी गाहड़वालों की राजधानी थी; यहाँ अनेक मन्दिरों एवं तालाबों का निर्माण हुआ किन्तु इनमें से इस समय केवल कर्मदेश्वर महादेव मन्दिर (कन्दवा, वाराणसी) के अतिरिक्त किसी अन्य मन्दिर के अवशेष नहीं मिलते। 'गाहड़वालों का इतिहास' की प्रामाणिकता के लिए चौरासी अभिलेखों का संग्रह किया गया है, साथ ही समकालीन साहित्य का भी उपयोग किया गया है। गाहड़वालों के लुप्त इतिहास को पुनर्जीवित करने का यह महत्त्वपूर्ण प्रयास है।

भारतीय इतिहास के गगन में गाहड़वाल वंश का उदय एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना है लेकिन इतिहासकारों द्वारा इसे अपेक्षित महत्त्व नहीं दिया गया। लगभग आधी शताब्दी पूर्व डॉ० रोमा नियोगी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अपने पी-एच०डी० शोध के लिए इस विषय को चुना था और सन् 1959 में **द हिस्ट्री ऑव द गाहड़वाल डायनेस्टी** नाम से प्रकाशित करवाया। विगत पाँच दशाब्दियों में गाहड़वालों के इतिहास से सम्बन्धित प्रभूत सामग्री प्रकाश में आई है और इसका समय-समय पर उपयोग भी किया गया है। गाहड़वाल राजाओं के बहुत सारे नये ताम्रपत्र इन वर्षों में मिले और प्रकाशित किये गये। लेकिन इन सबको एकत्र करके इस वंश का इतिहास लिखने का कोई समन्वित प्रयास नहीं हुआ। डॉ० प्रशान्त कश्यप ने इस कमी को दूर करने का प्रयत्न किया है।

इन्होंने केवल राजनीतिक इतिहास ही नहीं वरन् शासन-व्यवस्था के साथ आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, शिक्षा, साहित्य एवं कला आदि सभी पक्षों को अपने इस अध्ययन में सम्मिलित करके पुस्तक को व्यापक परिप्रेक्ष्य दिया है।

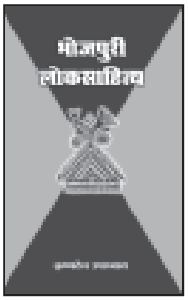

भोजपुरी लोकसाहित्य

कृष्णदेव उपाध्याय

पृष्ठ : 448 पृ०

सजि. : रु० 400.00 ISBN : 978-81-7124-658-8
अजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-659-5
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भोजपुरी भाषा, भोजपुरी लोकगीत, भोजपुरी लोकगाथा, भोजपुरी लोक-कथा तथा भोजपुरी प्रकीर्ण साहित्य पर शोधपरक ग्रन्थ।

भोजपुरी भाषा, भाषा का क्षेत्र, विस्तार, विभिन्न बोलियाँ, व्याकरण। विस्मृति के गर्भ में पड़े अनेक भोजपुरी रचनाकारों की कृतियों का अध्ययन और विस्तृत विवेचन। लोकगीतों की भारतीय परम्परा—वैदिक काल से लेकर अब तक। लोकगीतों का वर्गीकरण। भोजपुरी लोक-संस्कृति एवं प्रथाओं के चित्र। लोकगीतों का छन्द विधान। लोकगीतों में भारतीय संस्कृति का प्रवाह—भोजपुरी, मैथिली, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं में।

लोकगाथाओं की उत्पत्ति, प्रकार और विशेषताएँ। लोक-कथाओं की भारतीय परम्परा वैदिक आख्यानों से लेकर लोक-कथाओं का अविरल प्रवाह। लोक-कथाओं का वर्गीकरण, लोक-कथाओं की शैली।

प्रकीर्ण साहित्य के अन्तर्गत भोजपुरी लोकोक्तियाँ, मुहावरे, पहेलियाँ और विविध प्रकार की सूक्तियाँ, सामाजिक प्रथाएँ।

लोकसाहित्य के सभी अंगों का विस्तृत अध्ययन तथा समीक्षा। भोजपुरी लोक साहित्य का ज्ञानकोश।

लोक-साहित्य तथा संस्कृति सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों के प्रणेता, भोजपुरी लोक-साहित्य के सर्वप्रथम अनुसन्धानकर्ता डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय रचित इस विषय का श्रेष्ठतम प्रामाणिक ग्रन्थ।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : एक व्यक्तित्व चित्र

ज्ञानचंद जैन

पृष्ठ : 160 + 16 पृ० चित्र

सजि. : रु० 190.00

ISBN : 81-7124-361-4

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी नवजागरण के प्रथम पुरुष, युग-प्रवर्तक, सर्वतोमुखी प्रतिभासम्पन्न भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जीवन अत्यन्त विविधतापूर्ण और रसमय था। उनके साहित्य में उनका व्यक्तित्व झलकता है। 35 वर्ष के लघु जीवन में उन्होंने देश को, समाज को, साहित्य को नई दिशा प्रदान की। पत्र-पत्रिकाएँ, साहित्यिक कृतियाँ उनकी आत्म प्रकृति की सुरभि बिखेरती हैं।

भारतेन्दु की दानशीलता, रसिकता, अक्खड़पन, मुक्तहस्त पैसा लुटाने की प्रवृत्ति, उनके व्यक्तित्व के प्रमुख अंग हैं। स्वाभिमान ऐसा कि—

सेवक गुनीजन के, चाकर चतुर के हैं,
कविन के मीत, चित हित गुन गानी के।
सीधेन सों सीधे, महा बांके हम बांकेन सों,
'हरिचन्द' नगद दमाद अभिमानी के।
चाहिबे की चाह, काहू की न परवाह, नेही,
नेह के, दिवाने सदा सूरति-निवानी के।
सरबस रसिक के, सुदास दास प्रेमिन के,
सखा प्यारे कृष्ण के, गुलाम राधा रानी के।

दानशीलता के फलस्वरूप यह दिन भी देखना पड़ा—

मोहि न धन के सोच भाग्य बस होत जात धन।
पुनि निरधन सो देस न होत यहौ गुनि गुनि धन।
मों कहं एक दुख यह जू प्रेमिन ह्वै मोहे त्याग्यौ।
बिना द्रव्य के स्वानहु नहिं मोसो अनुराग्यौ॥
सब मिलन छोड़ी मित्रता बन्धुन नातौ तज्यों।
जो दास रह्यौ मम गेह को,
मिलन हूँ मैं अब सो लज्यौ॥

'घर फूँक तमाशा देख' को चरितार्थ करने वाले ऐसे उन्मुक्त अभिमानी के मनमोहक संघर्षपूर्ण व्यक्तित्व की झलकियाँ हैं, इस कृति में।

भारतेन्दु की लोकप्रियता का प्रमाण था कि शवयात्रा में सारा नगर शामिल था। सारा बाजार बन्द था। प्रेमचंद ऐसे साहित्यकार की शवयात्रा में गिनती के लोग थे जिसे देखकर एक नागरिक कहता है 'लगत हौ कउनो मास्टर मर गईल ह' प्रेमचंद जीवनभर कलम के मजदूर रह गये। भारतेन्दु ने अपने जीवन की सुगन्ध चारों ओर बिखेरी।

रीतिकालीन जीवन की सुगन्ध को आधुनिकता की प्रखरता प्रदान की। वे एक युग थे। उन्होंने इतिहास रचा, साहित्य और समाज को भारतेन्दुयुगीन बनाया।

भारतेन्दु का जीवन-सूत्र था—

चन्द्र टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार।
पै दृढ़ श्री हरिचन्द को, टरै न सत्य विचार॥

ऐसे विराट व्यक्तित्व की विविधता का चित्रण वयोवृद्ध साहित्यकार-पत्रकार ज्ञानचंद जैन ने इस पुस्तक में किया है। पुस्तक में अनेक अलभ्य चित्र दिए गये हैं, जो भारतेन्दुजी के परिवारजनों की उदारता से प्राप्त हुए हैं।

बाबा नीब करौरी के अलौकिक प्रसंग

बच्चन सिंह

पृष्ठ : 544

अजि. : रु० 250.00

ISBN : 81-7124-385-1

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

बाबा नीब करौरी अपने समय के महानतम संत थे। उनके जन्म काल के बारे में कोई प्रामाणिक विवरण उपलब्ध नहीं है लेकिन कुछ भक्त उनके जीवन का विस्तार 18वीं शताब्दी से 20वीं शताब्दी तक मानते हैं। बहरहाल उन्होंने 11 सितम्बर 1973 को लौकिक शरीर त्याग दिया।

बाबा नीब करौरी सर्वज्ञ थे, सर्वशक्तिमान थे और सर्वव्यापक थे। वे कहते थे, ''मैं हवा हूँ, मुझे कोई रोक नहीं सकता। मैं धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए पृथ्वी पर आया हूँ।''

बाबा समसामयिक संतों में सर्वोपरि थे। कुछ लोग उन्हें साक्षात् हनुमानजी का अवतार मानते थे तो कुछ संतों का कहना था कि नीब करौरी महाराज को हनुमानजी की सिद्धि है। वह कुछ भी कर सकते हैं। यदि मृत व्यक्ति को पुनर्जीवन देने की क्षमता किसी में है तो वह एकमात्र संत हैं—नीब करौरी बाबा।

बाबा ने कथा, प्रवचन, आडम्बर, प्रचार-प्रसार से दूर रह कर दीन-दुःखियों की सेवा में अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया। भक्तों का आर्तनाद सुनकर तुरन्त पहुँच जाते और उसे संकट से उबार देते। वे भक्त-वत्सल थे, गरीब नवाज थे और संकटमोचक थे।

बाबा नीब करौरी का सम्पूर्ण जीवन अलौकिक क्रिया-कलापों से भरा हुआ है। कोई शक्ति उन्हें एक जगह बाँध कर नहीं रख सकती थी। वे एक साथ भारत में भी होते और लन्दन में भी। लखनऊ में भी और कानपुर में भी। पवन वेग से क्षण भर में ही कहीं भी अवतरित हो जाते। उन्हें कमरे में कैद करके रखना असम्भव था। सूक्ष्म रूप में बाहर निकल जाते और वांछित कार्य सम्पन्न कर लौट आते। महाराजजी का हर क्षण अलौकिक होता—वे स्वयं अलौकिक जो थे।

महाराजजी के भक्तों ने उनकी अलौकिक घटनाओं, लीलाओं और प्रसंगों को विभिन्न पुस्तकों में संकलित किया है। ये पुस्तकें अंग्रेजी में भी हैं और हिन्दी में भी। इस पुस्तक में महाराजजी के सभी अलौकिक क्रिया-कलापों को एक जगह संकलित करने का प्रयास किया गया है।

कहीं दूर जब दिन ढले

गुणवंत शाह

पृष्ठ : 148

सजि. : रु० 60.00

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि मोन्टेइन के एक और वंशज गुजरात को मिले हैं। गुजराती भाषा में विरचित ललित निबन्धों के क्षेत्र में उनका यह संग्रह उल्लेखनीय वृद्धि करता है। मानवता को केन्द्र बिन्दु पर स्थापित करके, अपने बृहद अध्ययन एवं गहन चिन्तन के विश्वास पर लेखक ने जो आड़ी-तिरछी रेखायें खींची हैं, वे सप्रमाण सुरेखी आकृतियाँ उत्पन्न कर सकी हैं, इसमें संशय नहीं। जहाँ मेधा, मार्मिकता एवं मानवता का मेल हो वहीं ऐसी कोई उपलब्धि होती है।

डॉ० गुणवन्त भाई को जिन्होंने सुना है, या इनके साथ जिस किसी ने भी इत्मीनान से बात की है उन सबको उनके प्रसन्न, सुन्दर प्रत्युत्पन्न-मतिपूर्ण, विशुद्ध एवं समृद्ध व्यक्तित्व का पारस स्पर्श हुआ ही है, इस संग्रह के निबन्धों का पृथक-पृथक, प्रतिष्ठित पत्रिकाओं के माध्यम से, थोड़ा-थोड़ा, रस-पान करने का आनन्द जिन लोगों ने पिछले दशक में लिया है, उनको भी यह संग्रह चारु-गन्ध-युक्त चन्दन काष्ठ की भाँति बार-बार आनन्द देने वाला सिद्ध होगा। चन्दन तो घिस-घिस कर आकार में मिटता जाता है जबकि इन ललिताओं को चाहे जितनी बार पढ़ो पर इनका रस कम नहीं होता क्योंकि इनका अस्थि-पिंजर चिन्तन द्वारा निर्मित हुआ है और मांस, रक्त, त्वचा का स्थान प्रसन्नता, व्यंग्य एवं चुभती हुई शैली ने लिया है।

गुणवन्त भाई शैलीकार हैं। इन्होंने घिसघिस कर वाक्यों को स्वच्छ किया है। इनके शब्द-कोष में चुटीले व शिष्ट शब्दों का भण्डार है और जिस शब्द का ये चुनाव करते हैं वह पूर्ण अर्थवाही एवं भाववाही तो होता ही है साथ ही इसका नादतत्व भी आकर्षक होता है।

स्मृति-शेष

वरिष्ठ साहित्यकार केदार साथी का निधन

लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार और वरिष्ठ पत्रकार केदारनाथ दुबे साथी का हृदयगति रुक जाने से निधन हो गया। वे लगभग 77 वर्ष के थे। उल्लेखनीय है कि पत्रकारिता जगत में केदार साथी अमृत बाजार पत्रिका जनसत्ता समाचार पत्र से जुड़े रहे हैं। साथीजी ने अपने साथी प्रकाशन से करीब 52 किताबों का प्रकाशन किया। वे अखिल भारतीय प्रकाशक संघ में भी विभिन्न पदों पर रहकर स्व० श्री पुरुषोत्तमदास मोदी के साथ सक्रिय रहे।

डॉ० जयमंत मिश्र का निधन

साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित मैथिली के सुप्रसिद्ध कवि डॉ० जयमंत मिश्र का दरभंगा में निधन हो गया। डॉ० मिश्र को उनकी मैथिली काव्यकृति 'कविता कुसुमांजलि' के लिए 1995 का साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रदान किया गया था।

वरिष्ठ कथाकार सोहन शर्मा का निधन

हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार, उपन्यासकार और गम्भीर मार्क्सवादी विचारक-चिन्तक डॉ० सोहन शर्मा का 21 अक्टूबर को निधन हो गया। डॉ० सोहन शर्मा की दो दर्जन पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनके कहानी-संग्रह : 'बर्फ का चाकू', 'जूनी लकड़ियों का गट्ठर', 'आमने-सामने', 'आधे उखड़े नख की पीड़ा', 'अपनी जगह पर', 'स्याह होती धूप' आदि तथा कविता-संग्रह : 'थमना मत गोदावरी के साथ', 'मीणा घाटी' और 'समरवंशी' उपन्यास भी बहुचर्चित रहे।

डॉ० राकेश गुप्त का निधन

सुप्रसिद्ध रसवादी-मनोवैज्ञानिक, हिन्दी समीक्षक डॉ० छैलबिहारी लाल गुप्त का निधन विगत 4 अक्टूबर को हो गया। वे 91 वर्ष के थे। वे डी०एस०बी० कॉलेज, नैनीताल के डीन रहे। कविता-आलोचना की उन्होंने कुल दस पुस्तकें लिखीं, जिनमें 'साइकोलॉजिकल स्टडीज इन रस', 'स्टडीज इन नायक-नायिका भेद' हिन्दी जगत् में प्रशंसित हुईं। डॉ० गुप्त का लेखन नाम डॉ० राकेश गुप्त था। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने उन्हें 'साहित्य भूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया था।

जननाट्यकार शिवराम का निधन

61 वर्षीय शिवराम की मृत्यु दिल का दौरा पड़ने से 1 अक्टूबर को हो गई। वे लगभग 40 वर्षों से सक्रिय थे। पूरे उत्तर भारत में जनसंघर्षों और जनांदोलनों से जुड़े हुए अपने ढंग के अनूठे रंगकर्मी थे। राजस्थान के कोटा के रहने वाले शिवराम मजदूरों और किसानों को संगठित करने में मदद करना अपने रंगकर्म का मुख्य ध्येय समझते रहे। उन्होंने लगभग 11 नाटक एवं काव्य-संग्रहों की रचना की थी।

पण्डित पुट्टराज गवई का निधन

हिन्दुस्तानी और कर्नाटक शास्त्रीय संगीत से जुड़े प्रसिद्ध गायक-संगीतकार व लेखक पण्डित पुट्टराज गवई का लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया। संगीत परम्परा में उनके शिष्यों ने कीर्तिमान कायम करके वीरेश्वस पुण्य आश्रम का महत्त्व स्थापित किया है।

डॉ० शान्ति स्वरूप 'कुसुम' नहीं रहे

वरिष्ठ कवि एवं स्वतन्त्रता सेनानी डॉ० शान्ति स्वरूप 'कुसुम' का 18 अक्टूबर, 2010 को निधन हो गया। वे 87 वर्ष के थे। उन्होंने अनेक गीत संकलनों, खण्डकाव्यों और महाकाव्यों के लेखन द्वारा हिन्दी-काव्य की श्रीवृद्धि की। उत्कृष्ट काव्य सृजन के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं के लिए आपको उत्तर प्रदेश द्वारा अनेक सम्मानों से पुरस्कृत किया गया। अखिल भारतीय कवि सभा, दिल्ली की ओर से आपको 'आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन सम्मान' प्रदान किया गया और 'कुरुप्रदेश का कुसुम' शीर्षक अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट किया गया।

मनीषी चिंतक डॉ० वासुदेव पोद्दार नहीं रहे

11 नवम्बर को कोलकाता में भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के अध्येता, चिन्तक एवं प्रखर वक्ता डॉ० वासुदेव पोद्दार का निधन हो गया। उनका जन्म 14 जून, 1935 को कलकत्ता में हुआ था। वे संस्कृत, बंगला, अंग्रेजी के प्रकाण्ड विद्वान् थे। उन्होंने 'कालपुरुष', 'कालयात्रा', 'भारतीय सभ्यता का सांस्कृतिक फलक' जैसे कई कालजयी ग्रन्थों की रचना की। उन्हें 'व्याख्यान वाचस्पति', 'प्रज्ञा भारती', 'साहित्य महोपाध्याय', 'विक्रम सम्मान' सहित दर्जनों पुरस्कार-सम्मानों से अलंकृत किया गया।

भारतीय वाङ्मय परिवार की ओर से दिवंगत आत्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि

अध्येताओं, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं

के लिए

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

तीन हजार वर्ग फुट में विशाल शोरूम

विश्वविद्यालय प्रकाशन

विशालाक्षी भवन, चौक
(चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)
वाराणसी - 221 001 (उ०प्र०)
Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082
E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com
Website : www.vvpbooks.com

पृष्ठ 16 का शेष

'ग्रहों का खेल' पत्रिका लोकार्पित

24 अक्टूबर को दैनिक भास्कर समूह की मासिक पत्रिका 'ग्रहों का खेल' का लोकार्पण एक कार्यक्रम में किया गया, जिसमें देश के प्रतिष्ठित उद्योगपति, राजनेता, साहित्यकार व प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित थे।

प्रभाष जोशी की स्मृति में दो पुस्तकों का लोकार्पण

13 नवम्बर को वरिष्ठ पत्रकार स्व० श्री प्रभाष जोशी की स्मृति में दो महत्त्वपूर्ण पुस्तकों का लोकार्पण सम्पन्न हुआ। एक थी जाने-माने वरिष्ठ पत्रकार रामबहादुर राय द्वारा सम्पादित 'काली खबरों की कहानी...रिपोर्ट जो दबा दी गई' (रेमाधव प्रकाशन) और दूसरी पुस्तक थी पत्रकार व समाजकर्मी श्री संत समीर लिखित 'पत्रकारिता के युग निर्माता प्रभाष जोशी' (प्रभात प्रकाशन)। इन पुस्तकों का लोकार्पण राज्यसभा सदस्य श्री एच०के० दुआ तथा प्रसिद्ध आलोचक प्रो० नामवर सिंह ने किया।

पृष्ठ 10 का शेष

पत्रिका का अक्टूबर 2010 का अंक मिला। हार्दिक आभार। पत्रिका स्वस्थ विचारों की सुगन्ध फैला रही है। इस अंक के आलेख, सम्पादकीय आदि विचारोत्तेजक-ज्ञानवर्धक हैं। सुनील कुमार मानव के आलेख 'हिन्दी का बदलता स्वरूप' के सम्बन्ध में इतना ही कहना है कि जीवन्त भाषा अपने वातायन खोलकर रखती है ताकि बाहर की ताजी हवा प्रविष्ट होकर घर का पोषण कर सके। हिन्दी भी जीवन्त भाषा है और इसने अपना वातायन कभी बन्द नहीं किया है। इसलिए विश्व की अनेक भाषाओं के शब्दों को अंगीकार कर हिन्दी समृद्ध बन रही है।

—डॉ० वीरेन्द्र परमार, फरीदाबाद

'भारतीय वाङ्मय' के सितम्बर अंक में मेरी सूक्तियों को स्थान देने के लिए आभारी हूँ।

इस अंक का सम्पादकीय बहुत विचार के योग्य और शिक्षाप्रद बन पड़ा है। सर्वेक्षण के अन्तर्गत 'संगे आजादी' में हमारी चेतना को झकझोरने वाली बातें हैं। 'भारतीय वाडमय' की मशाल को जलाए रखियेगा, बहुत अँधेरे दूर करती है। **—राजेन्द्र केडिया,** कोलकाता

'भारतीय वाङ्मय' शिक्षा जगत् के लिए सुपरिचित पत्रिका है। जबसे प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र जी के लेख इसमें छप रहे हैं पत्रिका धनी हुई है एवं नये विचारों से लोगों का परिचय बढ़ा है। पुरस्कारों/सम्मानों की इतनी सूचना इकट्ठी कहीं नहीं मिलती इससे लिखने के प्रति प्रोत्साहन मिलता है। पत्रिका उत्प्रेरणा का कार्य करती है।

—डॉ० रामसुमेर यादव, लखनऊ

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

लघु भारत : वाराणसी, राजीव चतुर्वेदी एवं श्रीमती प्रमिला चतुर्वेदी, प्रकाशक : चतुर्वेदी प्रकाशन, लोक कल्याण सेवा समिति, 38/47 ए मोतीझील, महमूरगंज, वाराणसी-221010, मूल्य : 800/-रु० मात्र

× × × विश्व धरोहर 'वाराणसी' को देखने की एक दृष्टि है 'लघु भारत : वाराणसी'। आस्ट्रेलियावासी रचनाकारद्वय बनारस की मिट्टी से सुपरिचित प्रतीत होते हैं जिन्होंने इस नगर के अतीत और वर्तमान को देखने, समझने और प्रस्तुत करने की दिशा में अनुसंधानपूर्ण प्रयत्न किया है। विशाल भारत के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की बस्तियाँ और व्यापक धार्मिक-आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रसार इस नगर के चरित्र को 'राष्ट्रीय' बना देता है इसीलिए इसके लेखक इसे 'लघु भारत' की संज्ञा प्रदान करते हैं। पुस्तक में कई स्थान पर नामांकन की गलतियाँ हैं जो शायद इंगलिश से हिन्दी करने की प्रक्रिया में अथवा श्रुति या वर्तनी-दोष के कारण हुई हैं, इनकी आवृत्ति खटकती है। इस पौराणिक-ऐतिहासिक नगर को समग्रता में समेटने की कोशिश में बहुत-कुछ छूट गया है।

भारत : मुसलमानों की नज़र में, स्व० डॉ० रामकुमार चौबे, प्रकाशक : चौबे प्रकाशन, बी-48/37 मोतीझील, महमूरगंज, वाराणसी-221010, प्रथम संस्करण, मूल्य : 300/-रु० मात्र

× × × प्रस्तुत ग्रन्थ विद्वान लेखक के अंग्रेजी भाषा में लिखे गये प्रबन्ध 'इण्डिया एज़ टोल्ड बाई दी मुस्लिम्स' का हिन्दी रूपान्तर है। इस प्रबन्ध का हिन्दी अनुवाद लेखक की विदुषी पौत्रियों श्रीमती सुधा चतुर्वेदी एवं श्रीमती प्रतिभा चतुर्वेदी के अध्यवसाय का परिणाम है। यह प्रबन्ध तीन खण्डों के विभिन्न अध्यायों में विभाजित है। प्रथम खण्ड में मुस्लिम विद्वानों तथा लेखकों के ऐतिहासिक विवरण के साथ उनके अनुसंधान का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। दूसरे खण्ड में मुस्लिम विद्वानों द्वारा भारतीय दर्शन पर विवेचन प्रस्तुत है और तीसरे खण्ड में बौद्ध-दर्शन एवं उनके सम्प्रदायों के विवेचन के साथ हिन्दुओं के धार्मिक सम्प्रदायों, प्रथाओं आदि का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से कतिपय विलुप्त ऐतिहासिक-पुरातात्विक प्रमाणों की जानकारी भी मिलती है। वर्तमान भारत की सांस्कृतिक-संरचना की दृष्टि से यह अध्ययन उपादेय है—जो नवीन अनुसंधान की प्रेरणा देता है।

टुकड़ों में बँटा मन, डॉ० सुशील दाहिमा 'अभय', प्रकाशक : समन्वय प्रकाशन, के०बी० 97, प्रथम तल, कविनगर, गाजियाबाद-201002, प्रथम संस्करण, मूल्य : 150/-रु० मात्र

× × × प्रस्तुत काव्य संग्रह में 51 गीतात्मक रचनाएँ संगृहीत हैं। कवि की पहली रचना 'काई के फूल' के बाद यह दूसरा प्रकाशन है। इन रचनाओं में जीवन की सहज संवेदनाएँ अपने वर्तमान की आँच में तपकर निखरती प्रतीत होती हैं। × × × ''भयाक्रांत जब जीवन जीता/मेरा मैं तब कह देता है—/विवश पतंगा कब जीता है/दियरा जीवन जी लेता है।''

जग में मेरे होने पर, विजय लक्ष्मी 'विभा', प्रकाशक : साहित्य सदन, 149-जी/2, चकिया, इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश), प्रथम संस्करण, मूल्य : 250/-रु० मात्र

× × × आस्थावान कवियित्री के गीतों का यह संग्रह उनकी काव्य-यात्रा का एक महत्त्वपूर्ण सोपान है। ये गीत युग संघर्ष के बीच प्रेरणा और निराशा में आशा का संचार करने का दायित्व निभाते हैं। × × × ''इतना आज जलाओ मुझको/जल-जलकर दिनकर बन जाऊँ/जीवन भर की जलन जोड़कर/शाश्वत तम हरना सिखलाऊँ।''

दूसरी भेंट, मनसुख दास मनचन्दा, सम्पर्क : B-V1-1591, शहीद बाबा दीपसिंह नगर, गली नं० 3, मुक्तसर-152026, मूल्य : 90/-रु० मात्र

× × × 'दूसरी भेंट' एक उपन्यास-रचना है। समय की गति में विकास और विनाश के शाश्वत प्राकृतिक नियम के बीच मानव-जीवन भी बँधा हुआ है। इस उपन्यास की नायिका शबनम सामाजिक मान्यताओं और पारिवारिक मर्यादाओं के चक्रव्यूह से निकलकर अपनी अन्तरात्मा के नये आयाम की ओर बढ़ती है जहाँ अवसाद और उल्लास एकीकृत हो जाते हैं।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 11 नवम्बर-दिसम्बर 2010 अंक : 11-12

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 60.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2009-11

RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-005/2009-2011

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**